
राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 0194
छत्रपति बांकेलाल
RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

हास्य सम्राट बांकेलाल का हास्य विशेषांक

छत्रपति बांकेलाल



लेखक: तरुण कुमार वाही
संपादक: मनोज गुप्ता

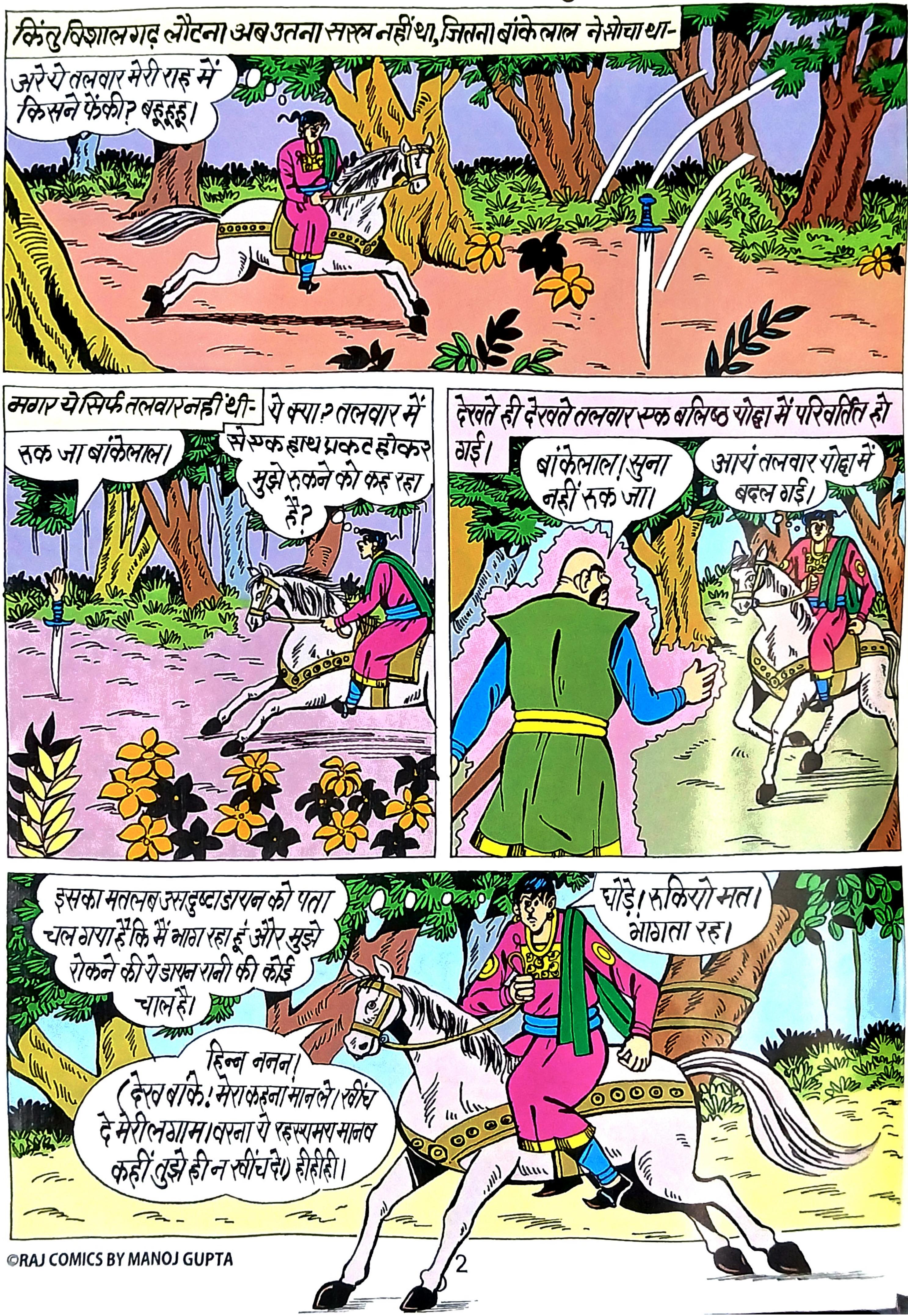
चित्रांकन: बेदी

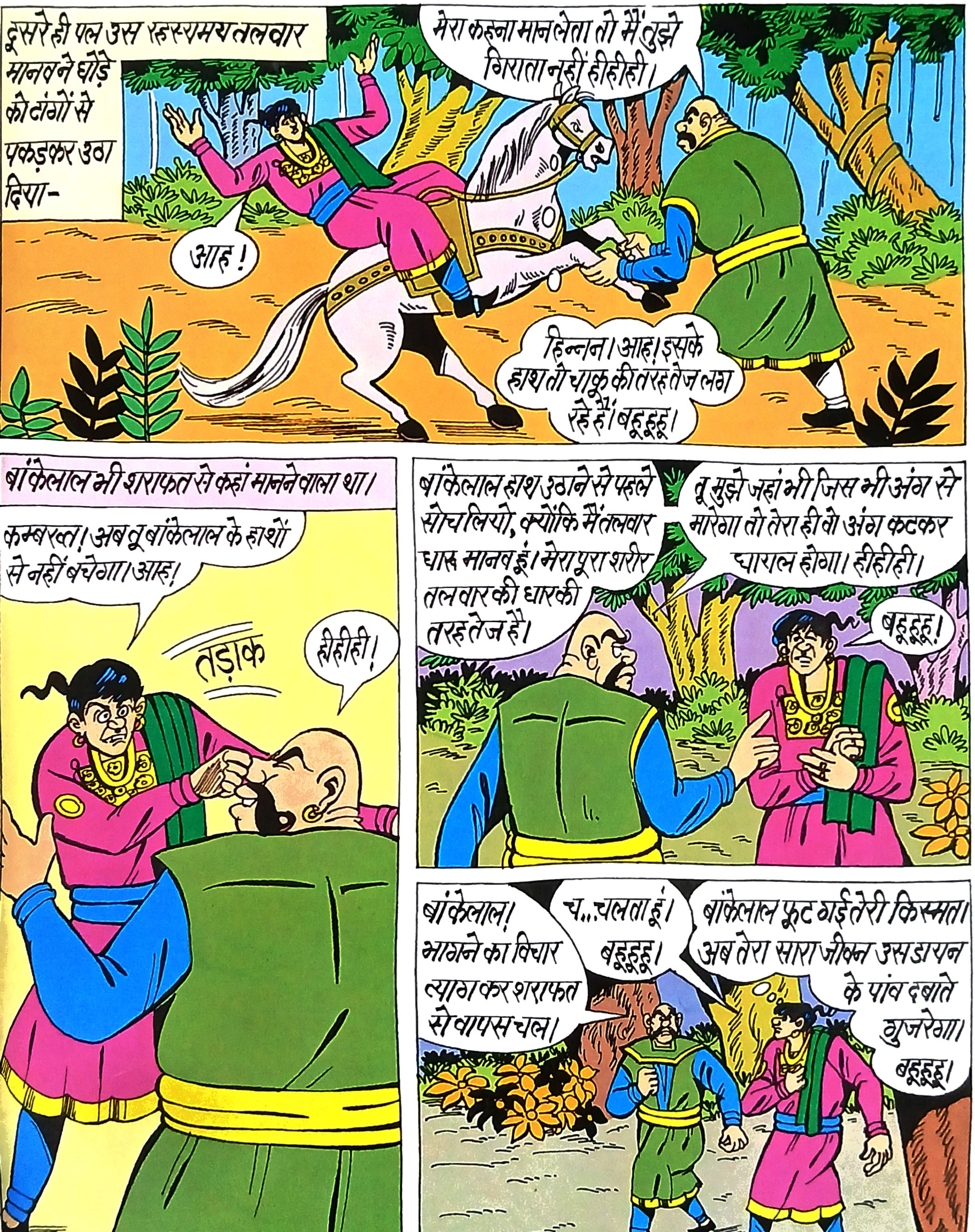
सहयोग: गौरव, अमित
अनूप, श्रीकांत

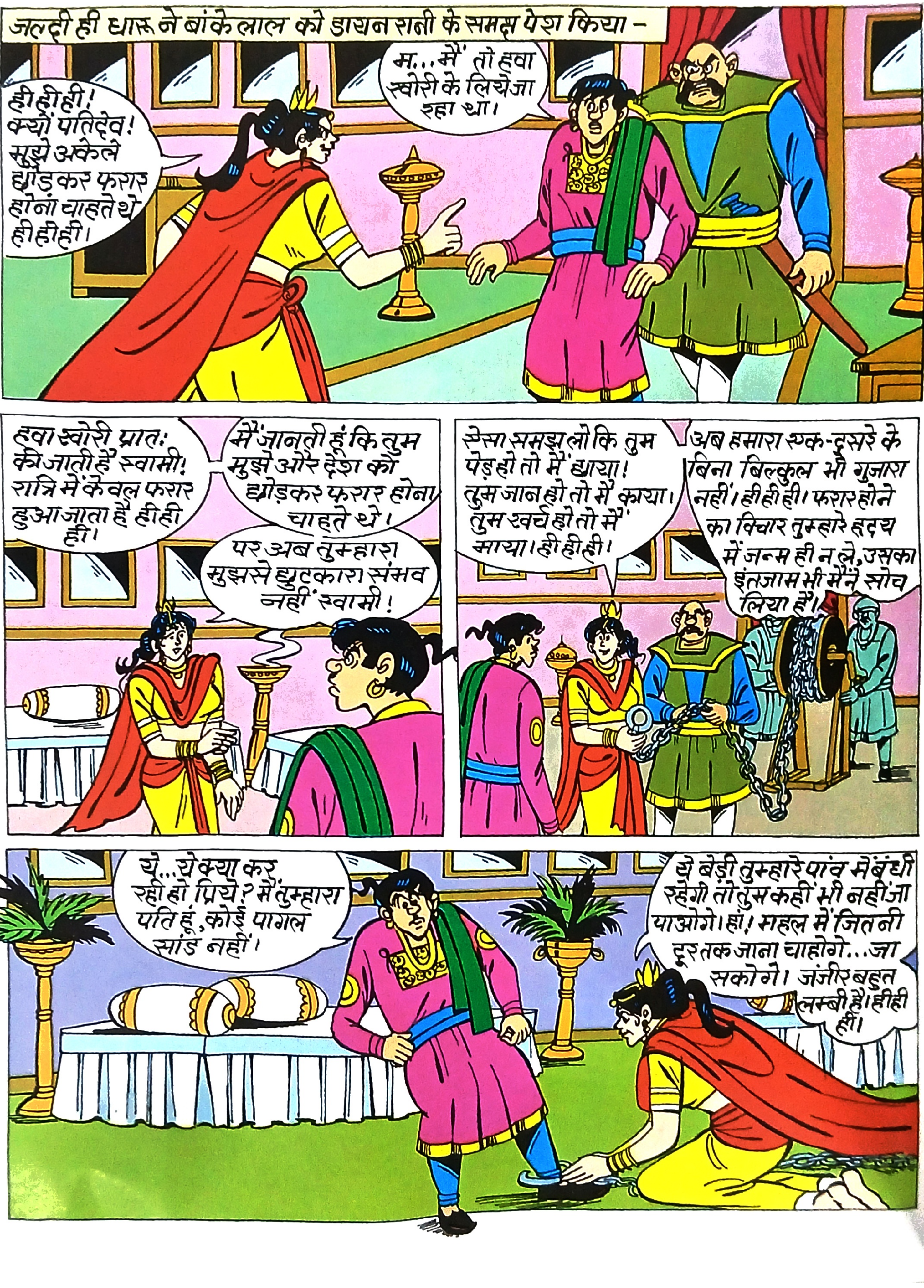
छत्तीसगढ़ की रानी रूपकंवर से विवाह के पश्चात राजा बनने के लोभ ने बांकेलाल को एक आज्ञाकारी पति तो बना दिया, किंतु राजा नहीं। और ये जानकर तो उसके होश ही उड़ गए कि रानी रूपकंवर के शरीर पर वास्तव में डायन दुष्टयंती का कब्जा है। अपनी डायन पत्नी से परेशान बांकेलाल बेचारा बहुत दुखी और विवश है। डायन दुष्टयंती को छत्तीस दांतों के जिस जबड़े की तलाश थी, वो भी बांकेलाल का ही निकला, जिसे प्राप्त करके अब उसे कुछ अतिरिक्त राक्षसी शक्तियां भी प्राप्त हो गई हैं। बांकेलाल उसे मार भी नहीं सकता। क्योंकि अगर वो ऐसा करता है तो डायन का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, पर बेचारी रानी रूपकंवर मारी जाएगी। बेचारा पति बांकेलाल अब क्या करेगा ?

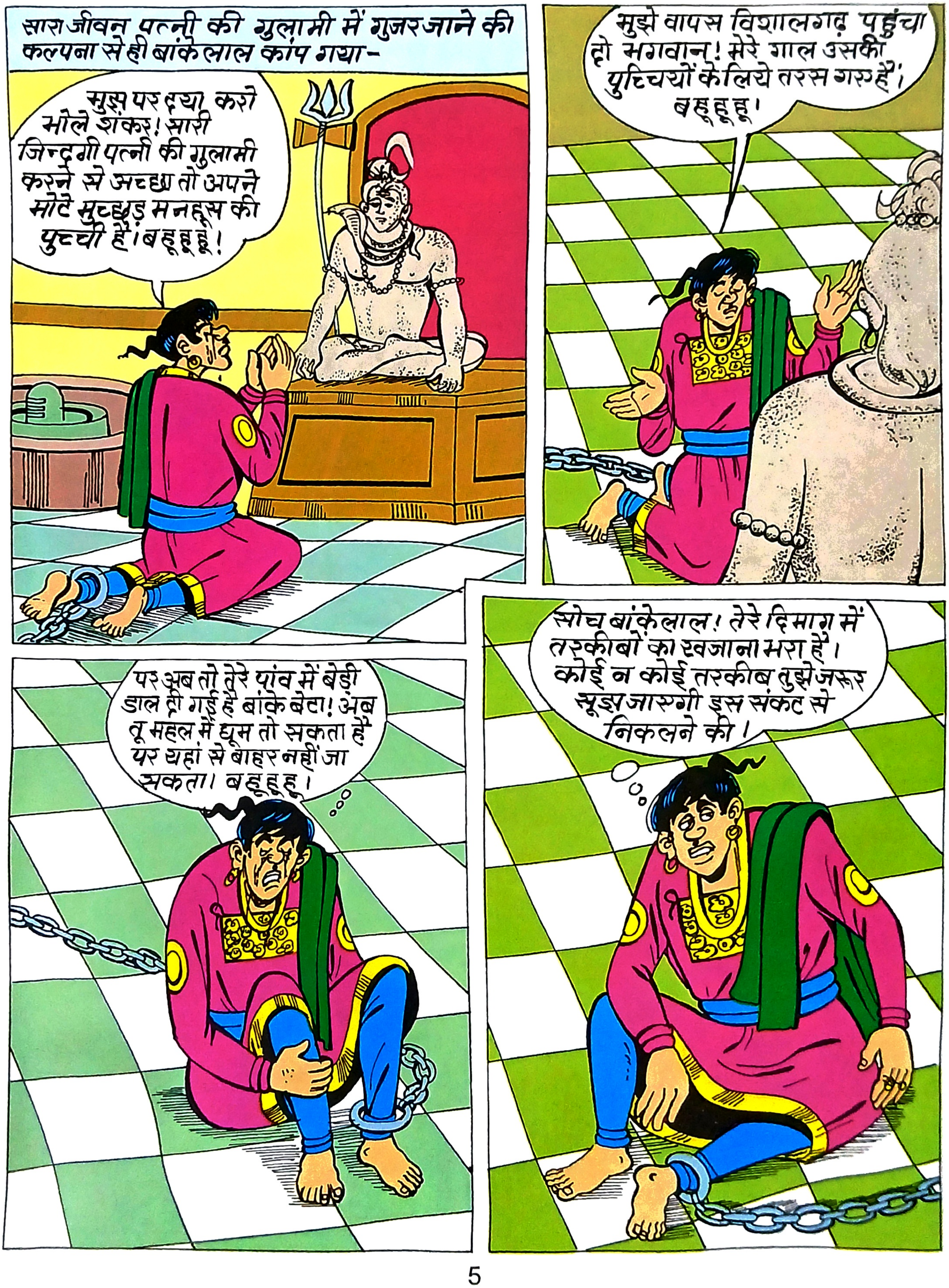


विशेष नोट: उपरोक्त विवरण बांकेलाल के नये पाठकों की जानकारी के लिए है ताकि वो प्रस्तुत कॉमिक का पूरा आनन्द ले सकें। संपूर्ण आनन्द प्राप्त करने के लिए पढ़ें: स्वयंवर, शैतान का जादू, डायन रानी दुष्टयंती और कबाड़ा भी।


किंतु विशालगढ़ लौटना अब उतना सरल नहीं था, जितना बांकेलाल ने सोचा था-
अरे ये तलवार मेरी राह में किसने फेंकी? बहूहूहू।
मगर ये सिर्फ तलवार नहीं थी-
रुक जा बांकेलाल।
ये क्या? तलवार में से एक हाथ प्रकट होकर मुझे रुकने को कह रहा है?
देखते ही देखते तलवार एक बलिष्ठ योद्धा में परिवर्तित हो गई।
बांकेलाल! सुना नहीं रुक जा।
आयं तलवार योद्धा में बदल गई।
इसका मतलब उस दुष्टा डायन को पता चल गया है कि मैं भाग रहा हूं और मुझे रोकने की ये डायन रानी की कोई चाल है।
घोड़े! रुकियो मत। भागता रह।
हिन्न ननन! (देख बांके! मेरा कहना मान ले। खींच दे मेरी लगाम। वरना ये रहस्यमय मानव कहीं तुझे ही न खींच दे।) हीहीही।

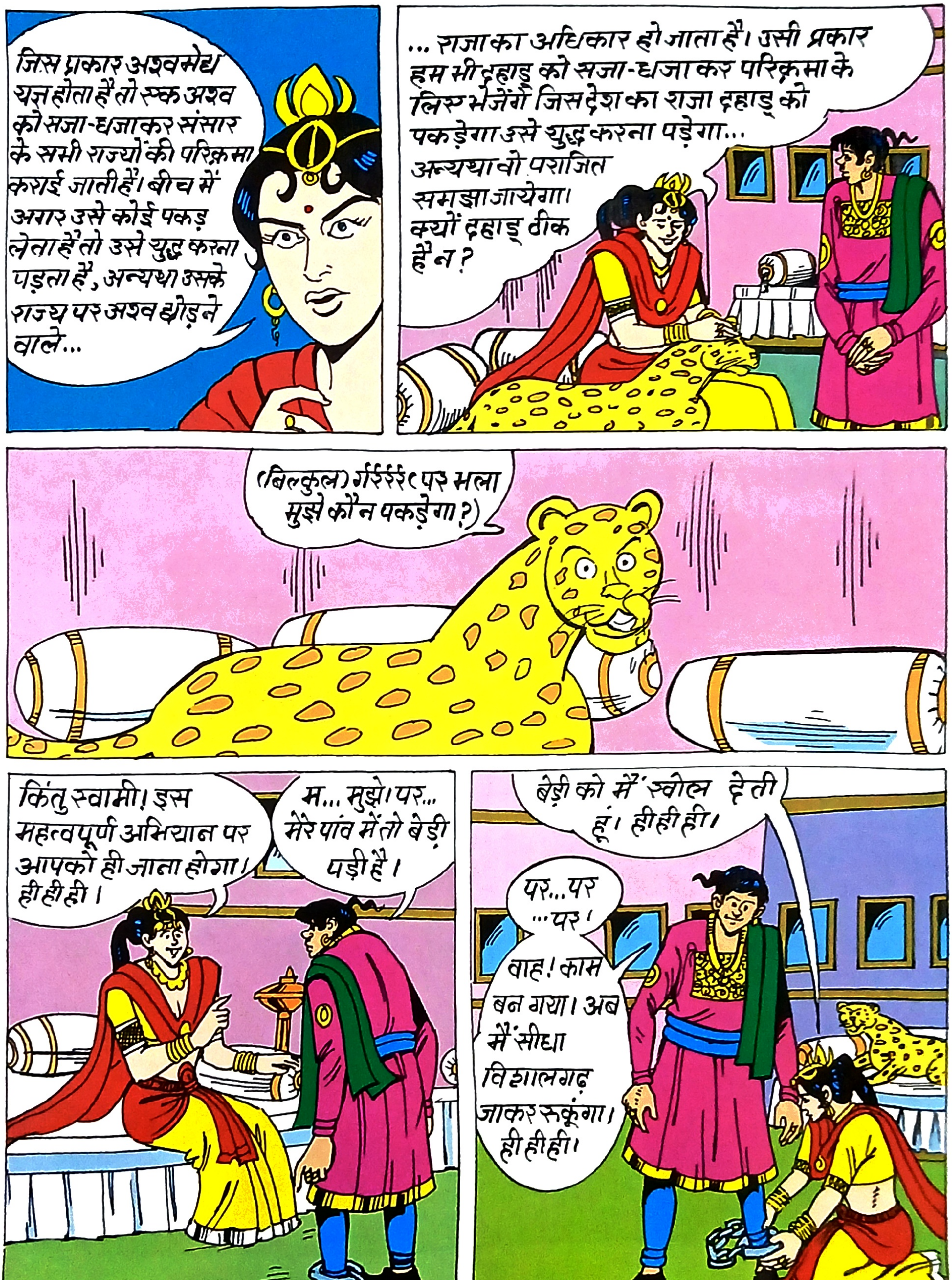

दूसरे ही पल उस रहस्यमय तलवार मानव ने घोड़े की टांगों से पकड़कर उठा दिया-
मेरा कहना मान लेता तो मैं तुझे गिराता नहीं हीहीही।
आह!
हिन्नन। आह! इसके हाथ तो चाकू की तरह तेज लग रहे हैं। बहूहूहू।
बांकेलाल भी शराफत से कहां मानने वाला था।
कम्बख्त! अब तू बांकेलाल के हाथों से नहीं बचेगा। आह!
तड़ाक
हीहीही!
बांकेलाल हाथ उठाने से पहले सोच लियो, क्योंकि मैं तलवार धारी मानव हूं। मेरा पूरा शरीर तलवार की धार की तरह तेज है।
तू मुझे जहां भी जिस भी अंग से मारेगा तो तेरा ही वो अंग कटकर घायल होगा। हीहीही।
बहूहूहू!
बांकेलाल! भागने का विचार त्याग कर शराफत से वापस चल।
च..चलता हूं। बहूहूहू।
बांकेलाल फूट गई तेरी किस्मत। अब तेरा सारा जीवन उस डायन के पांव दबाते गुजरेगा। बहूहूहू।


जल्दी ही धारू ने बांके लाल को डायन रानी के समक्ष पेश किया –
ही ही ही! क्यों पतिदेव! मुझे अकेले छोड़कर फरार होना चाहते थे ही ही ही।
म... मैं तो हवा खोरी के लिये जा रहा था।
हवा खोरी प्रातः की जाती है स्वामी! रात्रि में केवल फरार हुआ जाता है ही ही ही।
मैं जानती हूं कि तुम मुझे और देश को छोड़कर फरार होना चाहते थे।
पर अब तुम्हारा मुझसे छुटकारा संभव नहीं स्वामी!
ऐसा समझ लो कि तुम पेड़ हो तो मैं छाया! तुम जान हो तो मैं काया। तुम खर्च हो तो मैं माया। ही ही ही।
अब हमारा एक-दूसरे के बिना बिल्कुल भी गुजारा नहीं। ही ही ही। फरार होने का विचार तुम्हारे हृदय में जन्म ही न ले, उसका इंतजाम भी मैंने सोच लिया है।
ये... ये क्या कर रही हो प्रिये? मैं तुम्हारा पति हूं, कोई पागल सांड नहीं।
ये बेड़ी तुम्हारे पांव में बंधी रहेगी तो तुम कहीं भी नहीं जा पाओगे। हां! महल में जितनी दूर तक जाना चाहोगे... जा सकोगे। जंजीर बहुत लम्बी है। ही ही ही।

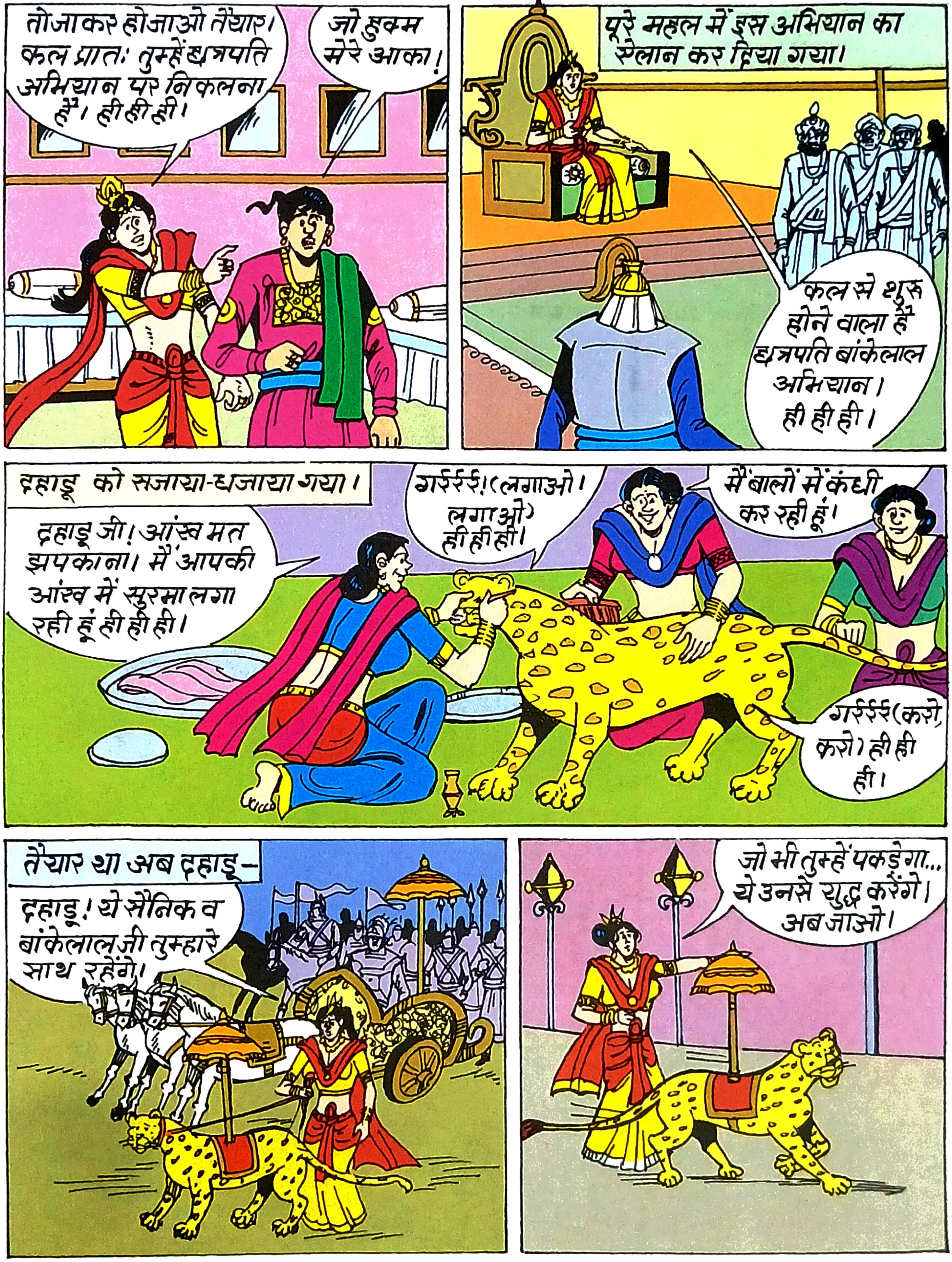


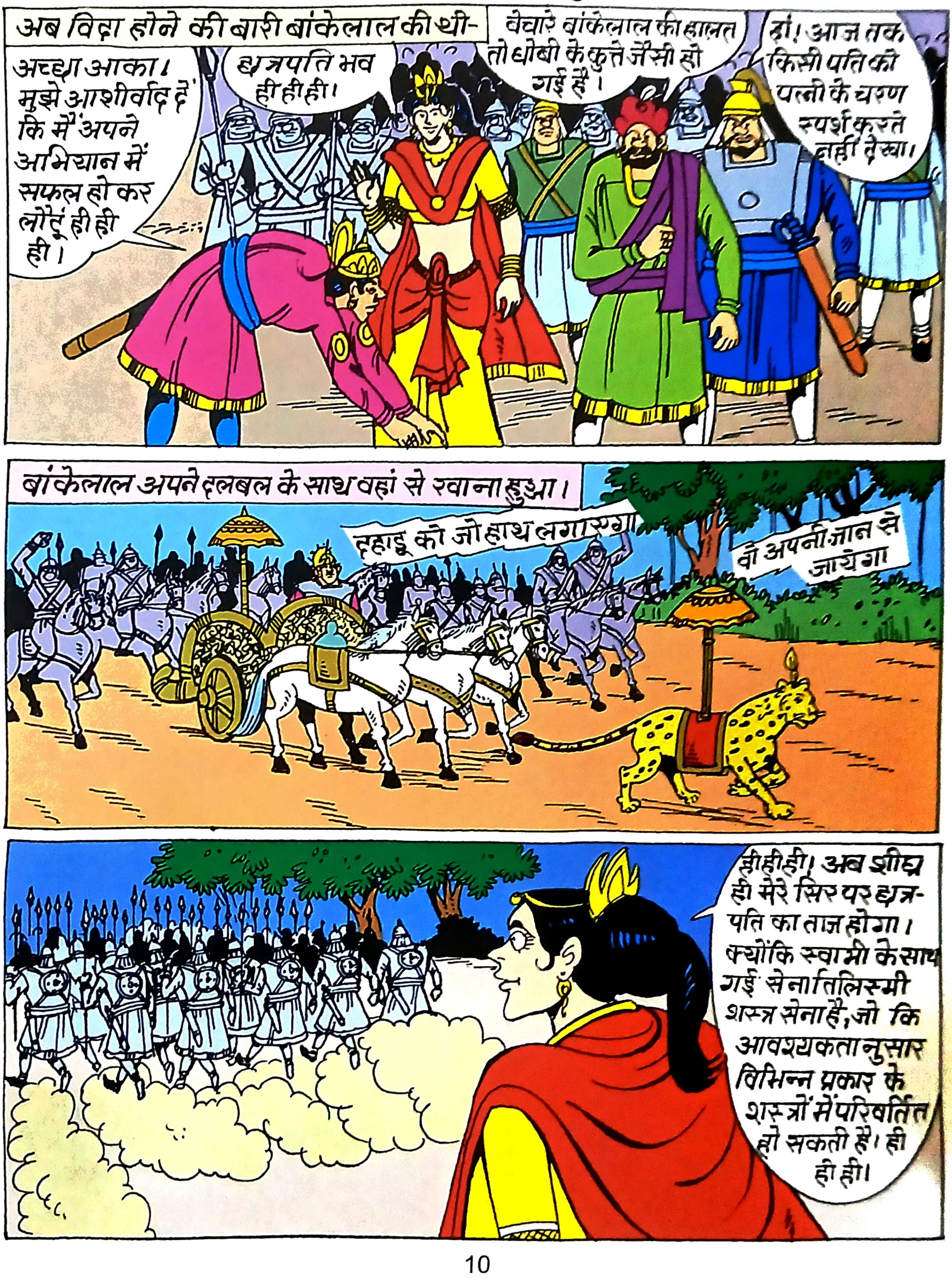
सारा जीवन पत्नी की गुलामी में गुजर जाने की कल्पना से ही बांकेलाल कांप गया–
मुझ पर दया करो भोले शंकर! सारी जिन्दगी पत्नी की गुलामी करने से अच्छा तो अपने मोटे मुच्छड़ मनहूस की पुच्ची है। बहूहूहू!
मुझे वापस विशालगढ़ पहुंचा दो भगवान! मेरे गाल उसकी पुच्चियों के लिये तरस गए हैं। बहूहूहू।
पर अब तो तेरे पांव में बेड़ी डाल दी गई है बांके बेटा! अब तू महल में घूम तो सकता है पर यहां से बाहर नहीं जा सकता। बहूहूहू।
सोच बांकेलाल! तेरे दिमाग में तरकीबों का खजाना भरा है। कोई न कोई तरकीब तुझे जरूर सूझ जाएगी इस संकट से निकलने की।

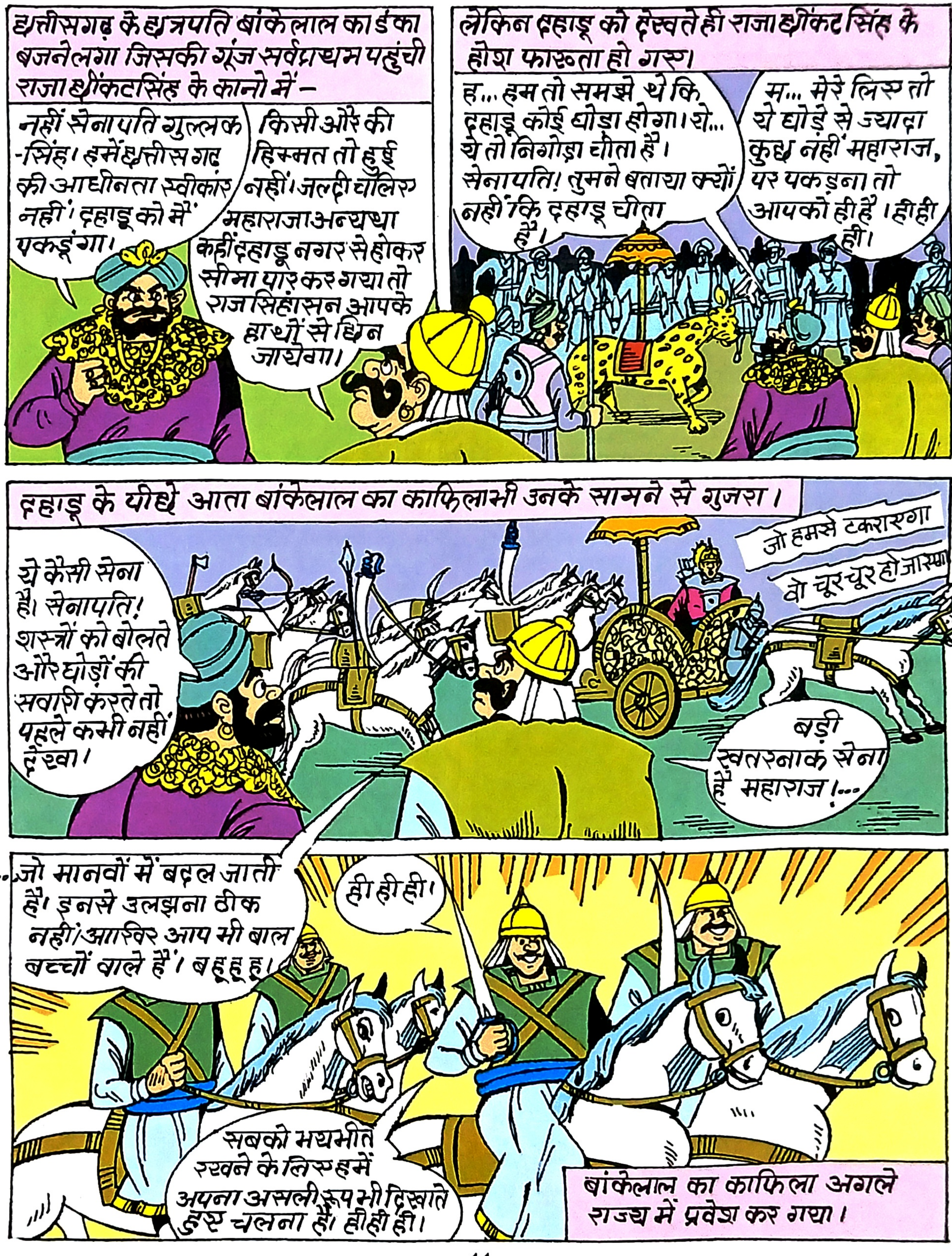

अहा! सूझ गई एक तरकीब विशालगढ़ पहुंचने की।
अगर मैं डायन रानी को छत्रपति बनने यानी संसार पर विजय पताका फहराने की राय दूं तो वो अवश्य ही इसे मानकर इस अभियान पर निकल पड़ेगी।
फिर जब डायन रानी विशालगढ़ को ललकारेगी तो वहां से जिन्दा बच कर नहीं आ पायेगी। क्योंकि विशालगढ़ को जीतना उसके लिये आसान नहीं होगा। अरे! जब मैं आज तक नहीं जीत पाया तो ये क्या खाकर जीतेगी। वहां जाकर उसे केवल मृत्यु प्राप्त होगी ही ही ही!
इस प्रकार डायन रानी की मृत्यु के साथ ही मैं छत्तीसगढ़ का राजा घोषित कर दिया जाऊंगा और मेरा छत्तीसगढ़ आने का उद्देश्य भी पूरा हो जायेगा। ही ही ही।
फिर जब बांकेलाल ने अपना विचार डायन रानी के सामने रखा तो—
ये तो तुमने बहुत अच्छा सोचा स्वामी!

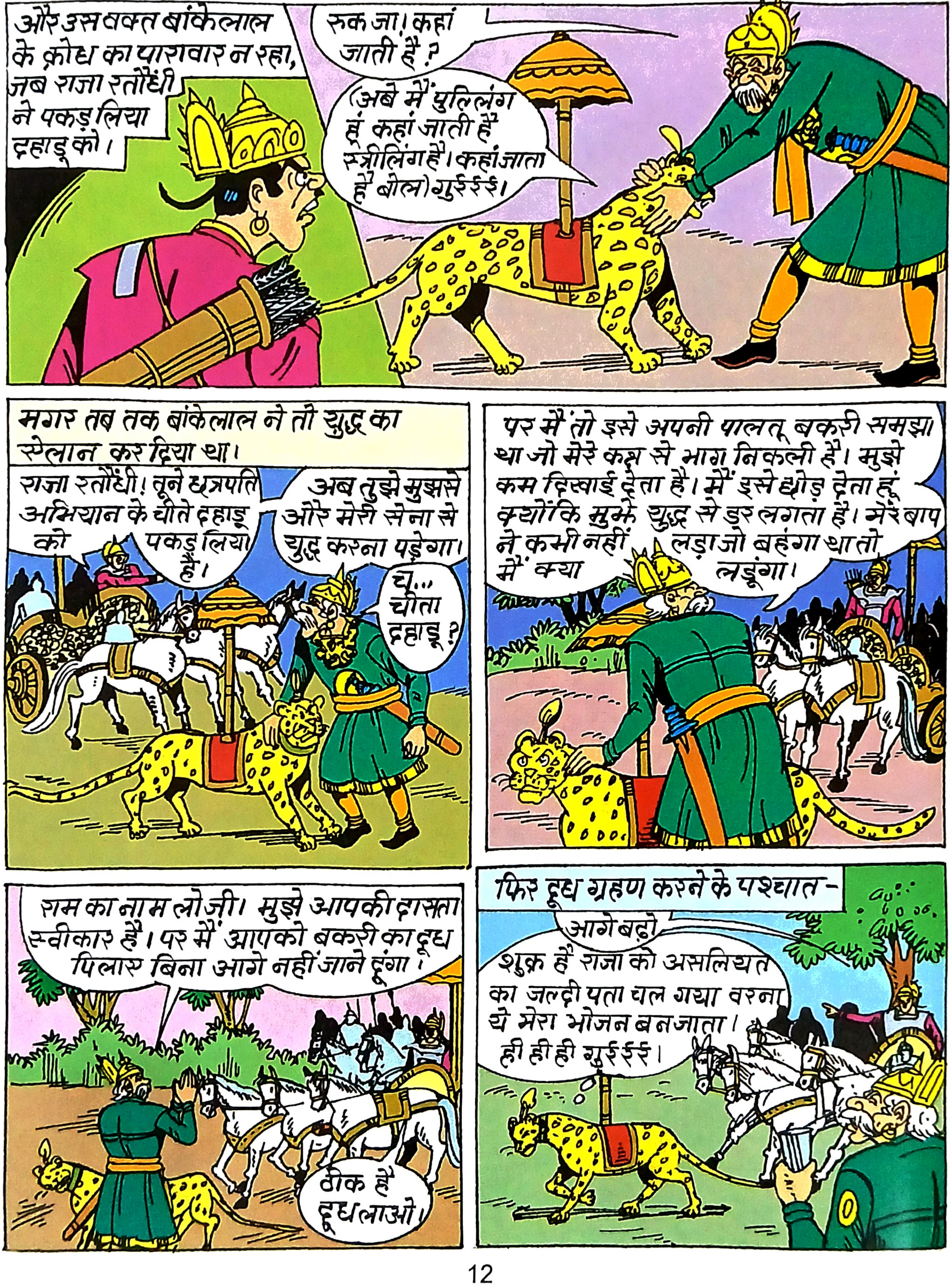

जिस प्रकार अश्वमेध यज्ञ होता है तो एक अश्व को सजा-धजाकर संसार के सभी राज्यों की परिक्रमा कराई जाती है। बीच में अगर उसे कोई पकड़ लेता है तो उसे युद्ध करना पड़ता है, अन्यथा उसके राज्य पर अश्व छोड़ने वाले...
...राजा का अधिकार हो जाता है। उसी प्रकार हम भी दहाड़ू को सजा-धजा कर परिक्रमा के लिए भेजेंगे जिस देश का राजा दहाड़ू को पकड़ेगा उसे युद्ध करना पड़ेगा... अन्यथा वो पराजित समझा जायेगा। क्यों दहाड़ू ठीक है न?
(बिलकुल) गर्र्र्र्र (पर भला मुझे कौन पकड़ेगा?)
किंतु स्वामी। इस महत्वपूर्ण अभियान पर आपको ही जाना होगा। ही ही ही।
म... मुझे। पर... मेरे पांव में तो बेड़ी पड़ी है।
बेड़ी को मैं खोल देती हूं। ही ही ही।
पर...पर ...पर।
वाह! काम बन गया। अब मैं सीधा विशालगढ़ जाकर रुकूंगा। ही ही ही।

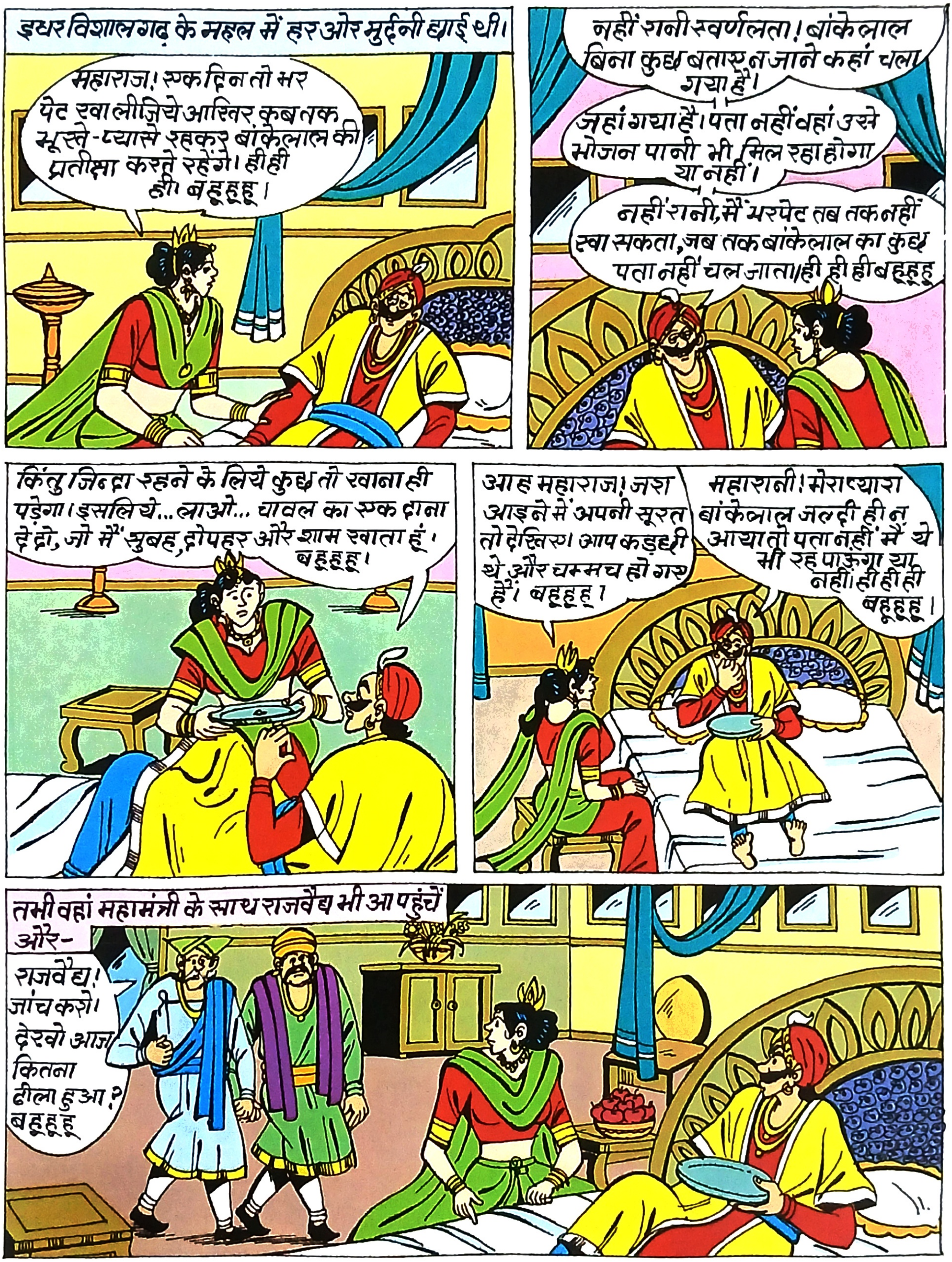

मुझे पता है कि इस वक्त स्वामी क्या सोच रहे हैं? किंतु स्वामी जो सोच रहे हैं वो कभी नहीं होगा। हीहीही!...
अरे! तुम मुझे अपनी चप्पल के नीचे लगा ये आइना क्यों दिखा रही हो? अ...ब...ये...तो अक!
...क्योंकि हीहीही!
हीहीही! घबराएं नहीं स्वामी। ये सम्मोहन चप्पल हैं जिससे शक्ल देखने वाला चप्पल के स्वामी का गुलाम हो जाता है। और उसी का ही कहा मानता है।
स्वामी! मैं कौन हूं?
मेरी आका!
स्वामी! तुम कौन हो? ही ही ही।
तुम्हारा दास।
जो कहूंगी करोगे?
करूंगा।
कहूंगी कुएं में कूद जाओ तो कूद जाओगे?
हां! फौरन। ही ही ही।

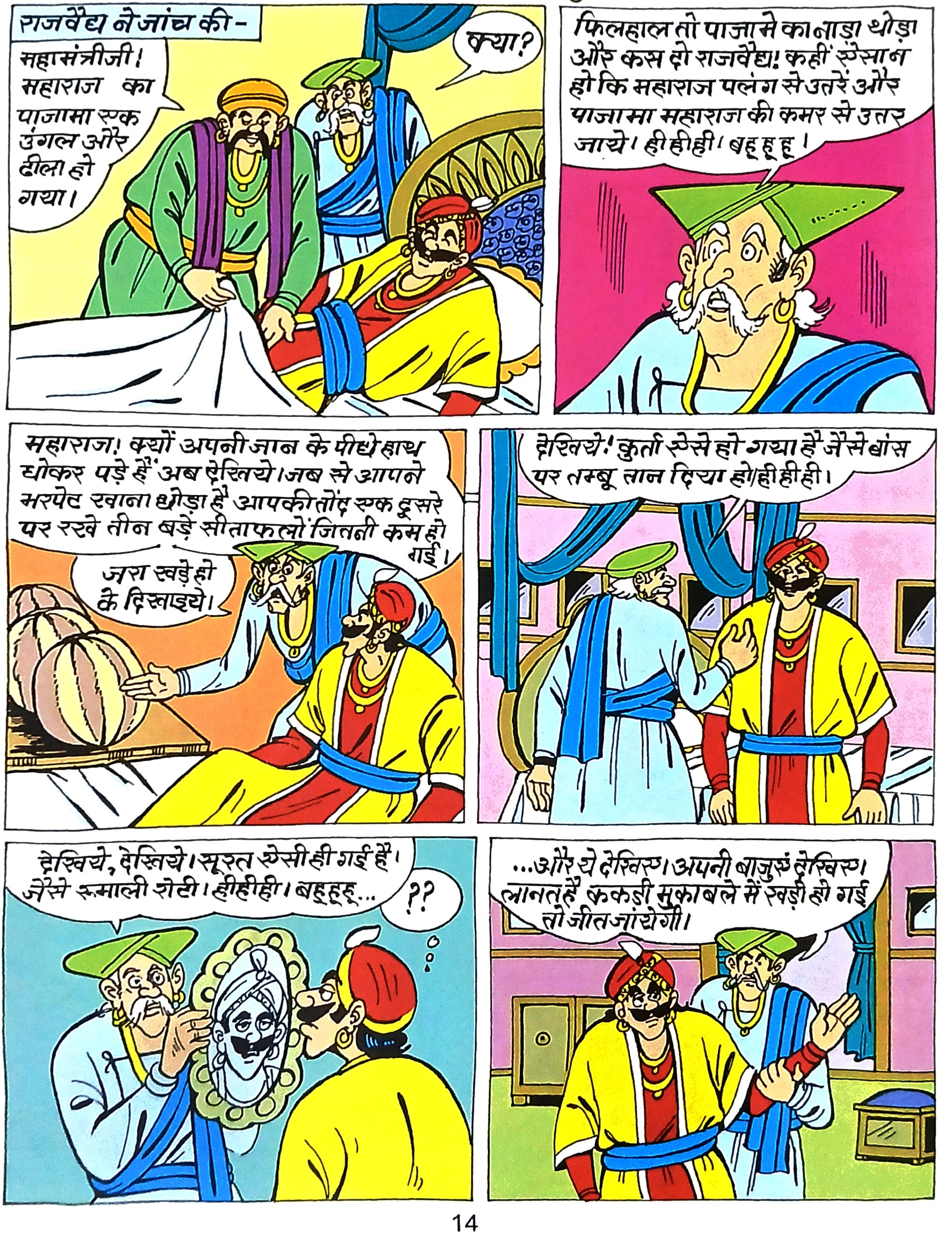

तो जाकर हो जाओ तैयार। कल प्रातः तुम्हें छत्रपति अभियान पर निकलना है। ही ही ही।
जो हुक्म मेरे आका!
पूरे महल में इस अभियान का ऐलान कर दिया गया।
कल से शुरू होने वाला है छत्रपति बांकेलाल अभियान। ही ही ही।
दहाड़ू को सजाया-धजाया गया।
दहाड़ू जी! आँख मत झपकाना। मैं आपकी आँख में सुरमा लगा रही हूँ ही ही ही।
गर्ऽऽऽ! (लगाओ। लगाओ) ही ही ही।
मैं बालों में कंघी कर रही हूँ।
गर्ऽऽऽ (करो, करो) ही ही ही।
तैयार था अब दहाड़ू-
दहाड़ू! ये सैनिक व बांकेलाल जी तुम्हारे साथ रहेंगे।
जो भी तुम्हें पकड़ेगा... ये उनसे युद्ध करेंगे। अब जाओ।

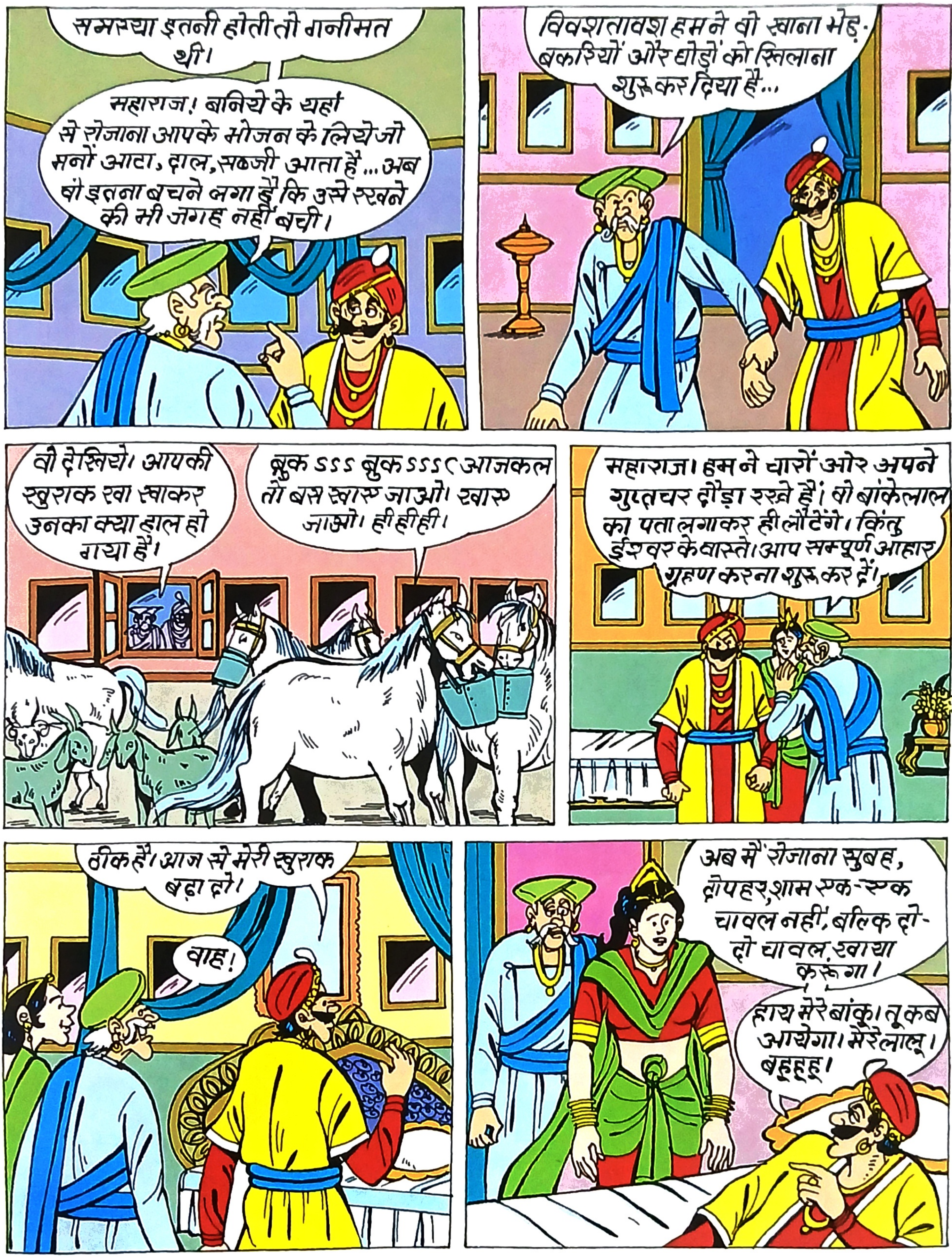

अब विदा होने की बारी बांकेलाल की थी-
अच्छा आका। मुझे आशीर्वाद दें कि मैं अपने अभियान में सफल हो कर लौटूं ही ही ही।
छत्रपति भव ही ही ही।
बेचारे बांकेलाल की हालत तो धोबी के कुत्ते जैसी हो गई है।
हां। आज तक किसी पति को पत्नी के चरण स्पर्श करते नहीं देखा।
बांकेलाल अपने दलबल के साथ वहां से रवाना हुआ।
दहाड़ू को जो हाथ लगाएगा
वो अपनी जान से जायेगा
ही ही ही। अब शीघ्र ही मेरे सिर पर छत्रपति का ताज होगा। क्योंकि स्वामी के साथ गई सेना तिलिस्मी शस्त्र सेना है, जो कि आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार के शस्त्रों में परिवर्तित हो सकती है। ही ही ही।


छत्तीसगढ़ के छत्रपति बांकेलाल का डंका बजने लगा जिसकी गूंज सर्वप्रथम पहुंची राजा छींकटसिंह के कानो में –
नहीं सेनापति गुल्लक-सिंह। हमें छत्तीसगढ़ की आधीनता स्वीकार नहीं। दहाड़ू को मैं पकड़ूंगा।
किसी और की हिम्मत तो हुई नहीं। जल्दी चलिए महाराजा अन्यथा कहीं दहाड़ू नगर से होकर सीमा पार कर गया तो राज सिंहासन आपके हाथों से छिन जायेगा।
लेकिन दहाड़ू को देखते ही राजा छींकट सिंह के होश फाख्ता हो गए।
ह... हम तो समझे थे कि दहाड़ू कोई घोड़ा होगा। ये... ये तो निगोड़ा चीता है। सेनापति! तुमने बताया क्यों नहीं कि दहाड़ू चीता है।
म... मेरे लिए तो ये घोड़े से ज्यादा कुछ नहीं महाराज, पर पकड़ना तो आपको ही है। ही ही ही।
दहाड़ू के पीछे आता बांकेलाल का काफिला भी उनके सामने से गुजरा।
ये कैसी सेना है। सेनापति! शस्त्रों को बोलते और घोड़ों की सवारी करते तो पहले कभी नहीं देखा।
जो हमसे टकराएगा
वो चूर चूर हो जाएगा
बड़ी खतरनाक सेना है महाराज!...
...जो मानवों में बदल जाती है। इनसे उलझना ठीक नहीं। आखिर आप भी बाल बच्चों वाले हैं। बहूहूहू।
ही ही ही।
सबको भयभीत रखने के लिए हमें अपना असली रूप भी दिखाते हुए चलना है। ही ही ही।
बांकेलाल का काफिला अगले राज्य में प्रवेश कर गया।


और उस वक्त बांकेलाल के क्रोध का पारावार न रहा, जब राजा रतौंधी ने पकड़ लिया दहाड़ू को।
रुक जा। कहां जाती है ?
(अबे मैं पुलिलंग हूं कहां जाती है स्त्रीलिंग है। कहां जाता है बोल) गुईईई।
मगर तब तक बांकेलाल ने तो युद्ध का ऐलान कर दिया था।
राजा रतौंधी! तूने छत्रपति अभियान के चीते दहाड़ू को पकड़ लिया है।
अब तुझे मुझसे और मेरी सेना से युद्ध करना पड़ेगा।
ची... चीता दहाड़ू ?
पर मैं तो इसे अपनी पालतू बकरी समझा था जो मेरे कक्ष से भाग निकली है। मुझे कम दिखाई देता है। मैं इसे छोड़ देता हूं क्योंकि मुझे युद्ध से डर लगता है। मेरे बाप ने कभी नहीं लड़ा जो बहंगा था तो मैं क्या लड़ूंगा।
राम का नाम लो जी। मुझे आपकी दासता स्वीकार है। पर मैं आपको बकरी का दूध पिलाए बिना आगे नहीं जाने दूंगा।
ठीक है दूध लाओ।
फिर दूध ग्रहण करने के पश्चात-
आगे बढ़ो
शुक्र है राजा को असलियत का जल्दी पता चल गया वरना ये मेरा भोजन बन जाता। ही ही ही गुईईई।


इधर विशालगढ़ के महल में हर ओर मुर्दनी छाई थी।
महाराज! एक दिन तो भर पेट खा लीजिये आखिर कब तक भूखे-प्यासे रहकर बांकेलाल की प्रतीक्षा करते रहेंगे। हीही ही बहूहूहू।
नहीं रानी स्वर्णलता! बांकेलाल बिना कुछ बताए न जाने कहां चला गया है।
जहां गया है। पता नहीं वहां उसे भोजन पानी भी मिल रहा होगा या नहीं।
नहीं रानी, मैं भरपेट तब तक नहीं खा सकता, जब तक बांकेलाल का कुछ पता नहीं चल जाता। ही ही हीबहूहूहू
किंतु जिन्दा रहने के लिये कुछ तो खाना ही पड़ेगा। इसलिये... लाओ... चावल का एक दाना दे दो, जो मैं सुबह, दोपहर और शाम खाता हूं। बहूहूहू।
आह महाराज! जरा आइने में अपनी सूरत तो देखिए। आप कड़छी थे और चम्मच हो गए हैं। बहूहूहू।
महारानी! मेरा प्यारा बांकेलाल जल्दी ही न आया तो पता नहीं मैं ये भी रह पाऊंगा या नहीं। ही ही ही बहूहूहू।
तभी वहां महामंत्री के साथ राजवैद्य भी आ पहुंचे और-
राजवैद्य! जांच करो। देखो आज कितना ढीला हुआ? बहूहूहू


राजवैद्य ने जांच की -
महामंत्रीजी! महाराज का पाजामा एक उंगल और ढीला हो गया।
क्या?
फिलहाल तो पाजामे का नाड़ा थोड़ा और कस दो राजवैद्य! कहीं ऐसा न हो कि महाराज पलंग से उतरें और पाजामा महाराज की कमर से उतर जाये। ही ही ही। बहू हू हू।
महाराज! क्यों अपनी जान के पीछे हाथ धोकर पड़े हैं अब देखिये। जब से आपने भरपेट खाना छोड़ा है आपकी तोंद एक दूसरे पर रखे तीन बड़े सीताफलों जितनी कम हो गई।
जरा खड़े हो के दिखाइये।
देखिये! कुर्ता ऐसे हो गया है जैसे बांस पर तम्बू तान दिया हो! ही ही ही।
देखिये, देखिये। सूरत ऐसी हो गई है। जैसे रूमाली रोटी। हीहीही। बहुहहू...
??
...और ये देखिए। अपनी बाजुएं देखिए। लानत है ककड़ी मुकाबले में खड़ी हो गई तो जीत जायेगी।


समस्या इतनी होती तो गनीमत थी।
महाराज! बनिये के यहां से रोजाना आपके भोजन के लिये जो मनों आटा, दाल, सब्जी आता है... अब वो इतना बचने लगा है कि उसे रखने की भी जगह नहीं बची।
विवशतावश हम ने वो खाना भेड़-बकरियों और घोड़ों को खिलाना शुरू कर दिया है...
वो देखिये। आपकी खुराक खा खाकर उनका क्या हाल हो गया है।
बुक ऽऽऽ बुक ऽऽऽ(आजकल तो बस खाए जाओ। खाए जाओ। ही ही ही।
महाराज। हम ने चारों ओर अपने गुप्तचर दौड़ा रखे हैं। वो बांकेलाल का पता लगाकर ही लौटेंगे। किंतु ईश्वर के वास्ते। आप सम्पूर्ण आहार ग्रहण करना शुरू कर दें।
ठीक है। आज से मेरी खुराक बढ़ा दो।
वाह!
अब मैं रोजाना सुबह, दोपहर, शाम एक-एक चावल नहीं, बल्कि दो-दो चावल खाया करूंगा।
हाय मेरे बांकु। तू कब आयेगा। मेरे लालू। बहुहुहु।

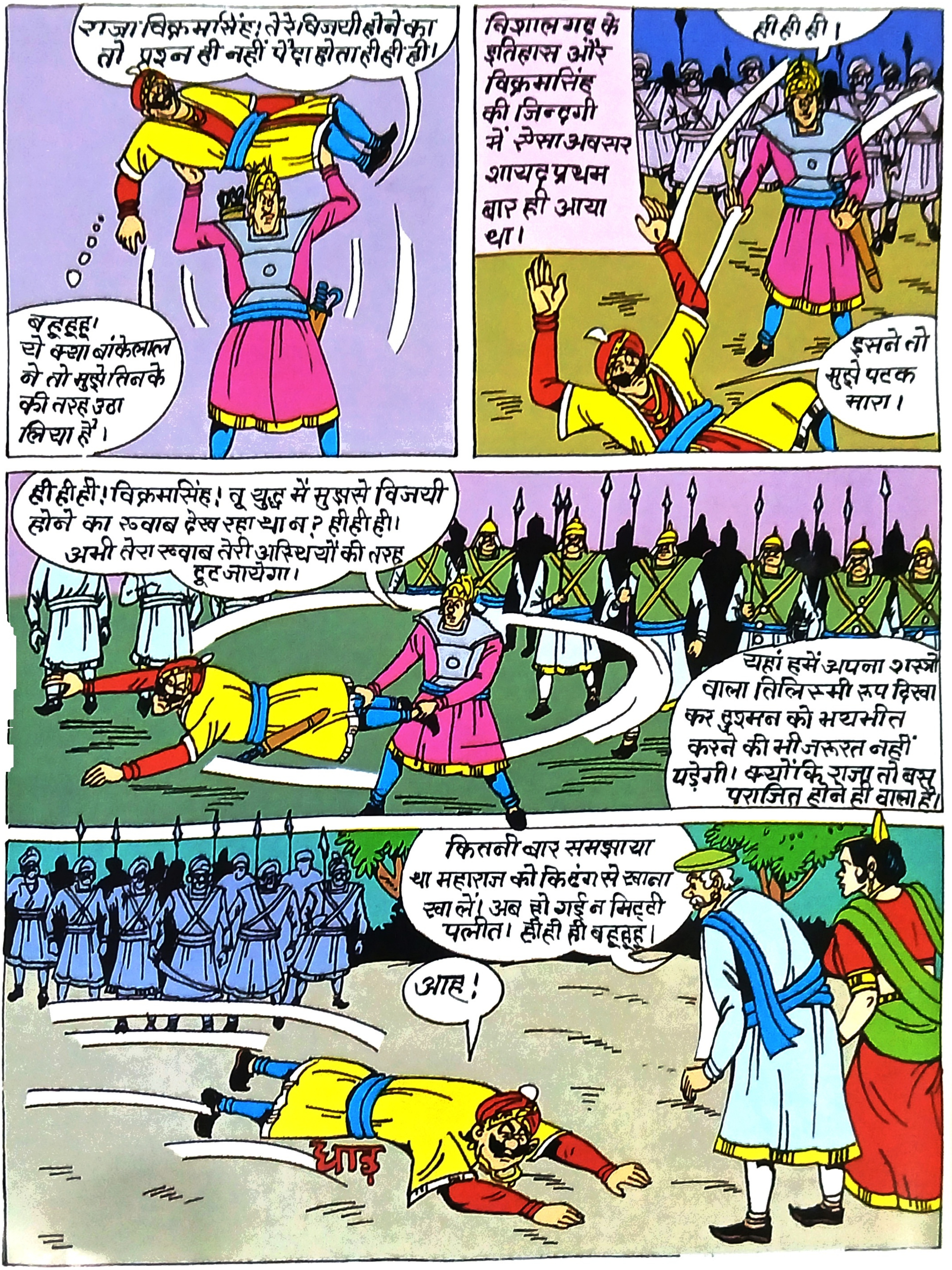

आखिर बांकेलाल की खबर आ ही गई, जिसे लेकर आया था सेनापति।
महाराज। बांकेलाल आ गया। ही हीही।
क्या। बांकेलाल आ गया।
!!
??
कहां है? कहां है मेरा प्यारा बांकेलाल? उसकी पुच्ची लिये जमाना बीत गया। अब तो होंठों पर भी पापड़ी जम गई। कहां है मेरा लाल? मेरा बांकेलाल? बहूहूहू।
पापड़ी नहीं महाराज, वो तो गोल गप्पे के साथ मिलती है। पपड़ी। हीही ही।
किंतु सेनापति! बांकेलाल है कहां? तुम उसे साथ क्यों नहीं लाए?
बांकेलाल जी को लाना आसान नहीं महारानी जी!

कहानी 19 पेज से जारी


सेनापति! ये क्या कह रहे हो? ठीक से समझाओ कहां है बांकेलाल?
और सेनापति सब कुछ बताता चला गया।
सब कुछ सुनने के बाद -
नहीं! ये नहीं हो सकता। बांकेलाल विशालगढ़ पर आक्रमण करने की सोच भी नहीं सकता।
मैं दहाड़ु को पकड़ने जा रहा हूं। मैं भी देखूंगा कि बांकेलाल मुझपर आक्रमण कैसे करता है?
मुझे भी सेना तैयार रखनी पड़ेगी क्योंकि इस वक्त बांकेलाल छतीसगढ़ का प्रतिनिधित्व...
...कर रहा है। अगर युद्ध आरम्भ हो गया तो मुझे भी मैदान में कूदना पड़ेगा।
पूरे विशालगढ़ में चर्चा फैल गई।
क्या? बांकेलाल ने विशालगढ़ पर चढ़ाई कर दी।
किंतु बांकेलाल ने ऐसा क्यों किया?
विशालगढ़ में रहकर तो विशालगढ़ उसका ही था।

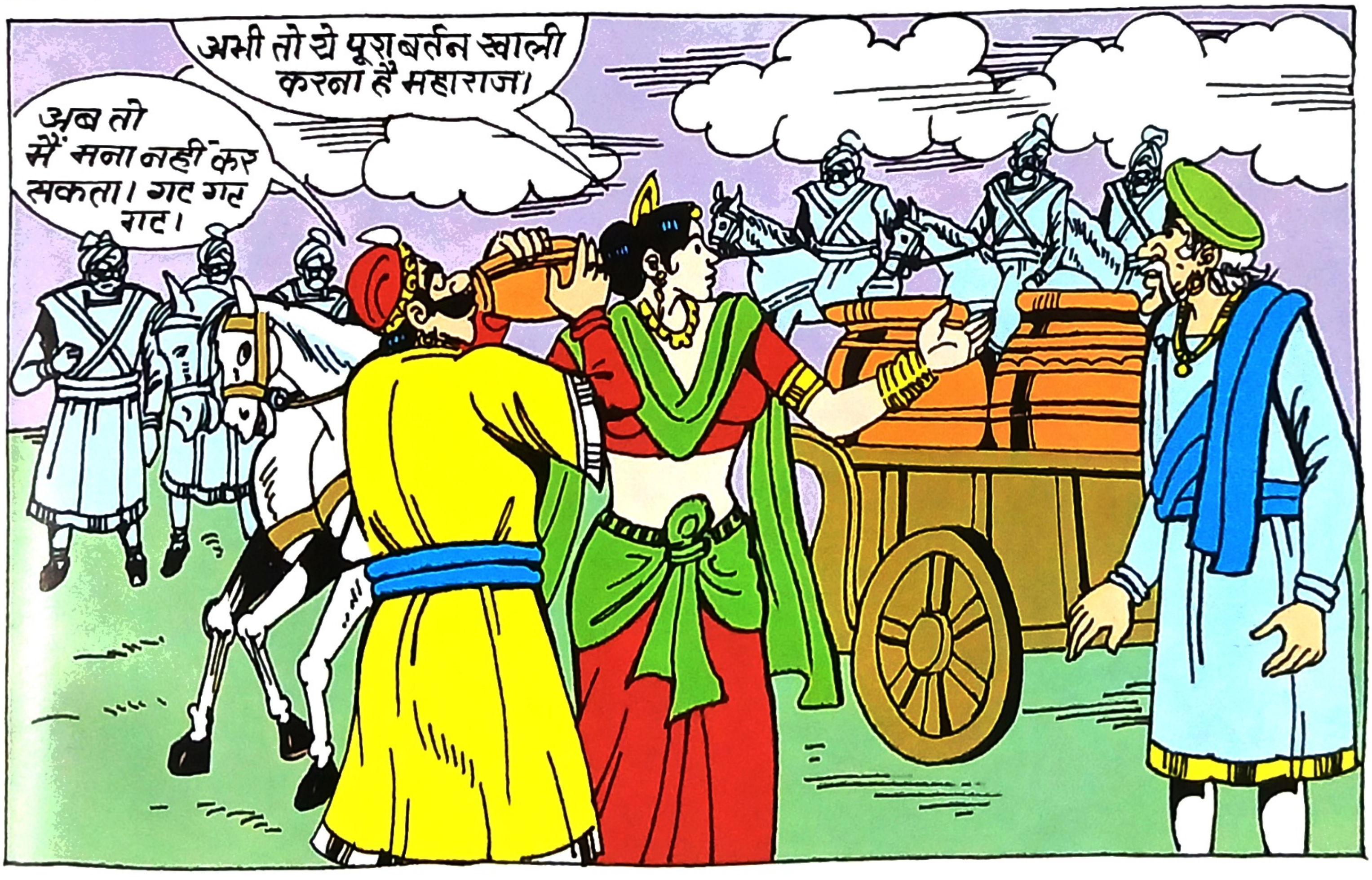

किंतु राजा विक्रमसिंह ने दहाड़ू को आगे न बढ़ने दिया।
रुक जा दहाड़ू! मैंने तुझे पकड़ा।
गुर्रर अबे कान छोड़ पकड़ना है तो गर्दन का पट्टा पकड़। गुर्र्रर।
रथ दौड़ाता वहां आ पहुंचा बांकेलाल-
राजा! दहाड़ू को पकड़कर तूने युद्ध का ऐलान कर दिया है।
मेरा प्यारा बांकू!
मेरे बांकेलाल। तूने मुझे पहचाना नहीं! ये मैं हूं तेरा मुच्छड़! विक्रमसिंह आ गले लग जा।
विक्रमसिंह रथ पर चढ़ गया
बांकेलाल! तू कहां चला गया था? देख, तेरे जाने के बाद मेरी क्या हालत हो गई?
अरे कमबख्त! अगर मुझसे कोई भूल हो गई थी तो मुझे बताकर तो जाता। बहूहूहू।


अबे ओ सीख कबाब।
पीछे हट तू मेरे रथ पर कैसे चढ़ गया?
तड़ाक
आह!
युद्ध करना है तो कर अन्यथा मेरे सैनिक छत्तीसगढ़ की विजय पताका विशालगढ़ पर फहरा देंगे।
विक्रम सिंह फौरन ही उठ कर खड़ा हो गया।
बांकेलाल! तुमने मुझे पहचाना भी नहीं और लात भी मारी।
ज्यादा बातें न बना राजा विक्रमसिंह! जल्दी से तलवार निकाल और युद्ध कर।
तुम्हें युद्ध ही करना है तो उतरो रथ से नीचे। ये युद्ध तुम्हारे और मेरे बीच में होगा। किन्तु तुम्हें ये वायादा करना होगा कि अगर ये युद्ध में जीत गया तो तुम्हें फिर यहीं रहना होगा। तुम विशालगढ़ छोड़कर नहीं जाओगे मेरे प्यारे बांकेलाल, मैं तुम्हारी पुच्चियों के बिना नहीं रह सकता। ही ही ही बहूहह।
मुझे मंजूर है।


राजा विक्रमसिंह! तेरे विजयी होने का तो प्रश्न ही नहीं पैदा होता ही ही ही।
बहूहूहू! ये क्या बांकेलाल ने तो मुझे तिनके की तरह उठा लिया है।
विशाल गढ़ के इतिहास और विक्रमसिंह की जिन्दगी में ऐसा अवसर शायद प्रथम बार ही आया था।
ही ही ही।
इसने तो मुझे पटक मारा।
ही ही ही! विक्रमसिंह! तू युद्ध में मुझसे विजयी होने का ख्वाब देख रहा था न? ही ही ही। अभी तेरा ख्वाब तेरी अस्थियों की तरह टूट जायेगा।
यहां हमें अपना शस्त्रों वाला तिलिस्मी रूप दिखा कर दुश्मन को भयभीत करने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि राजा तो बस पराजित होने ही वाला है।
कितनी बार समझाया था महाराज को कि ढंग से खाना खा लें। अब हो गई न मिट्टी पलीत। ही ही ही बहूहूहू।
आह!
धाड़

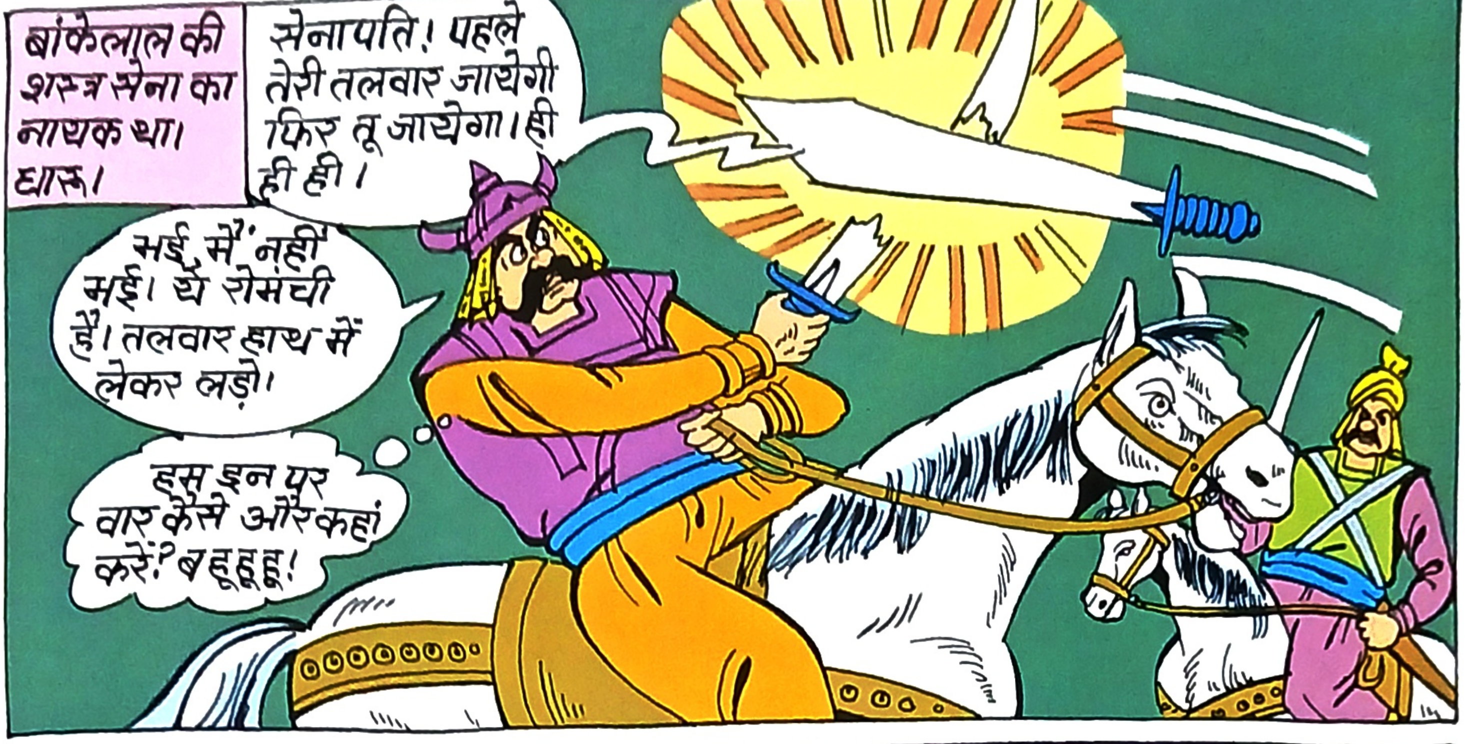

महारानी ने आकर राजा विक्रमसिंह को उठाया और ललकार भरे स्वर मे बोली-
दुष्ट बांकेलाल! तुझे युद्ध करने का शौक है न? तो ये युद्ध होगा। जरा थोड़ी देर ठहर जा।
बांकेलाल किसी को भी पहचान क्यों नहीं रहा?

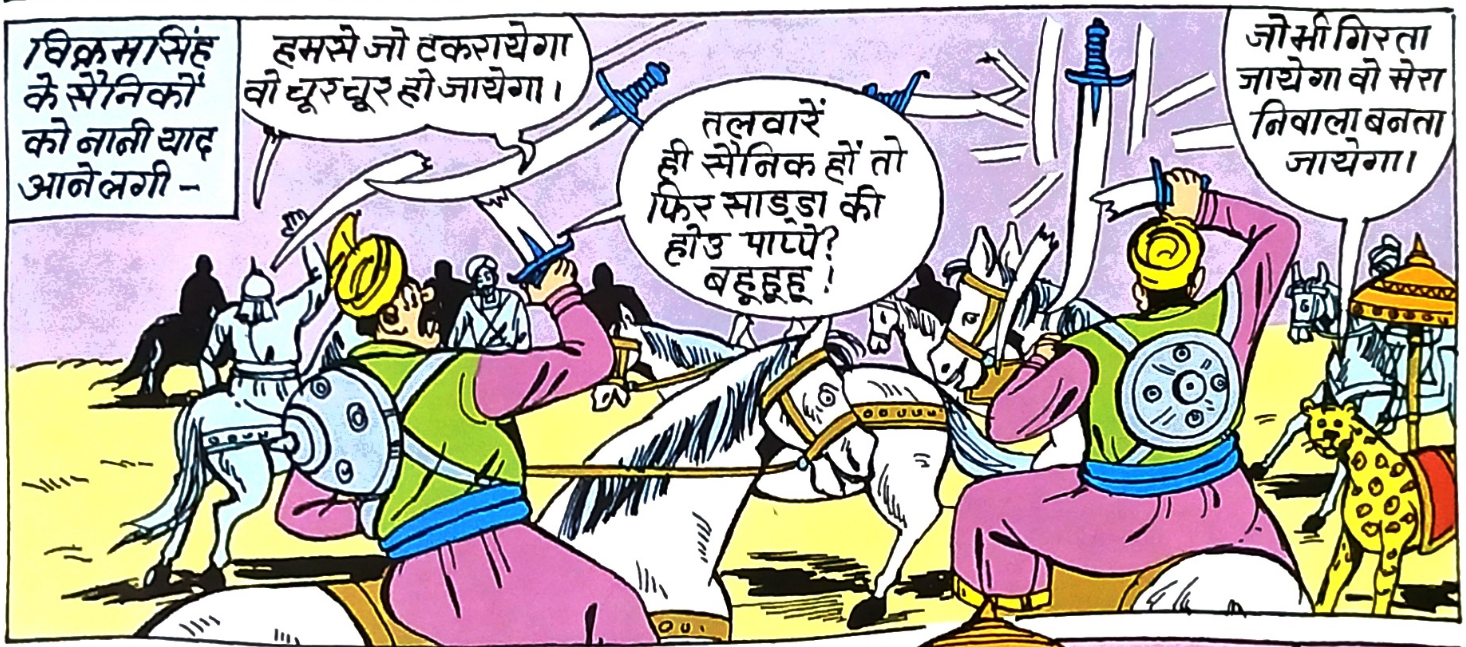

महाराज! ये लीजिये। फलों का रस ग्रहण करें। क्योंकि आपने ही कहा था कि जब तक बांकेलाल लौट नहीं आता, तब तक आप पौष्टिक आहार ग्रहण नहीं करेंगे। और अब तो बांकेलाल लौट आया है।
गट गट गट
अबतो मैं मना नहीं कर सकता।


अभी तो ये पूरा बर्तन खाली करना है महाराज।
अब तो मैं मना नहीं कर सकता। गट गट गट।


मेरे पाजामे का नाड़ा कस रहा है। इसे ढीला करो वरना मैं और फलों का रस नहीं पी सकूंगा।
पेट कसना तो अच्छा शगुन है। हीहीही।
आप घबराएं नहीं महाराज! मैं नाड़ा ढीला करके बांध देता हूं। किंतु आप खुराक लेना जारी रखिए।
ये लीजिये महाराज! ये विशेष काजू, बादाम, किशमिश का दलिया। इसे जल्दी से सटक जाइये। हीहीही।
अब तो मैं मना नहीं कर सकता। गट गट गट।
नाड़ा और कस गया।
अरे वाह! अब तो महाराज की रही तोंद बाहर आ गई है। हीहीही।
महाराज पहले की तरह तंदुरुस्त हो गए। महाराज की तलवार लाओ।


महाराज! सेनापति भी सेना लेकर आ गया है। तलवार थामकर दुष्ट बांकेलाल की ललकार का जवाब दीजिये।
राजा विक्रमसिंह! मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता।
टकरा गई राजा विक्रमसिंह और बांकेलाल की तलवारें।
बांकेलाल! तूने मुझे प्रणाम भी नहीं किया।
अरे कम्बख्त! कम से कम प्रणाम तो कर लेता।
बातें मत कर राजा, युद्ध कर युद्ध।
मेरे बहादुर सैनिको! टूट पड़ो दुश्मन सैनिकों पर।
ये तो हमारा असली रूप देखते ही भाग खड़े होंगे। ही ही ही।
देखते ही देखते बांके की सेना बदल गई शस्त्र सेना में—
ही ही ही! क्यों बे? हमसे लड़ोगे।
ये क्या? ये तो कोई तिलिस्मी शस्त्र सेना लगती है जिसके सैनिक शस्त्र में बदल गए बहूहूहू।

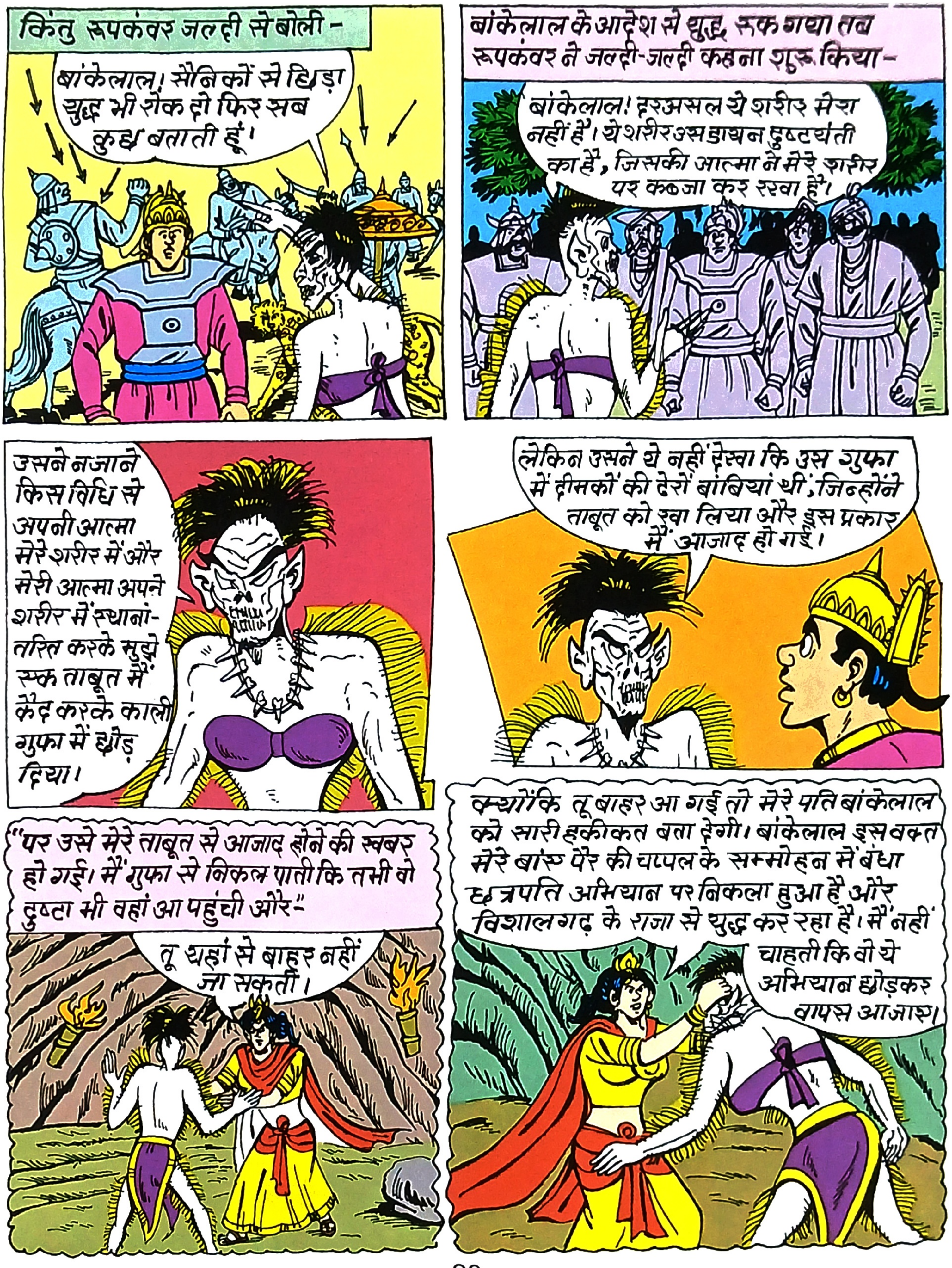

बांकेलाल की शस्त्र सेना का नायक था। धारू।
सेनापति! पहले तेरी तलवार जायेगी फिर तू जायेगा। ही ही ही।
भई, मैं नहीं भई। ये रोमंची है। तलवार हाथ में लेकर लड़ो।
हम इन पर वार कैसे और कहां करें? बहूहूहू!


विक्रमसिंह के सैनिकों को नानी याद आने लगी -
हमसे जो टकरायेगा वो चूर चूर हो जायेगा।
तलवारें ही सैनिक हों तो फिर साड्डा की होउ पाप्पे? बहुहुहु!
जो भी गिरता जायेगा वो मेरा निवाला बनता जायेगा।

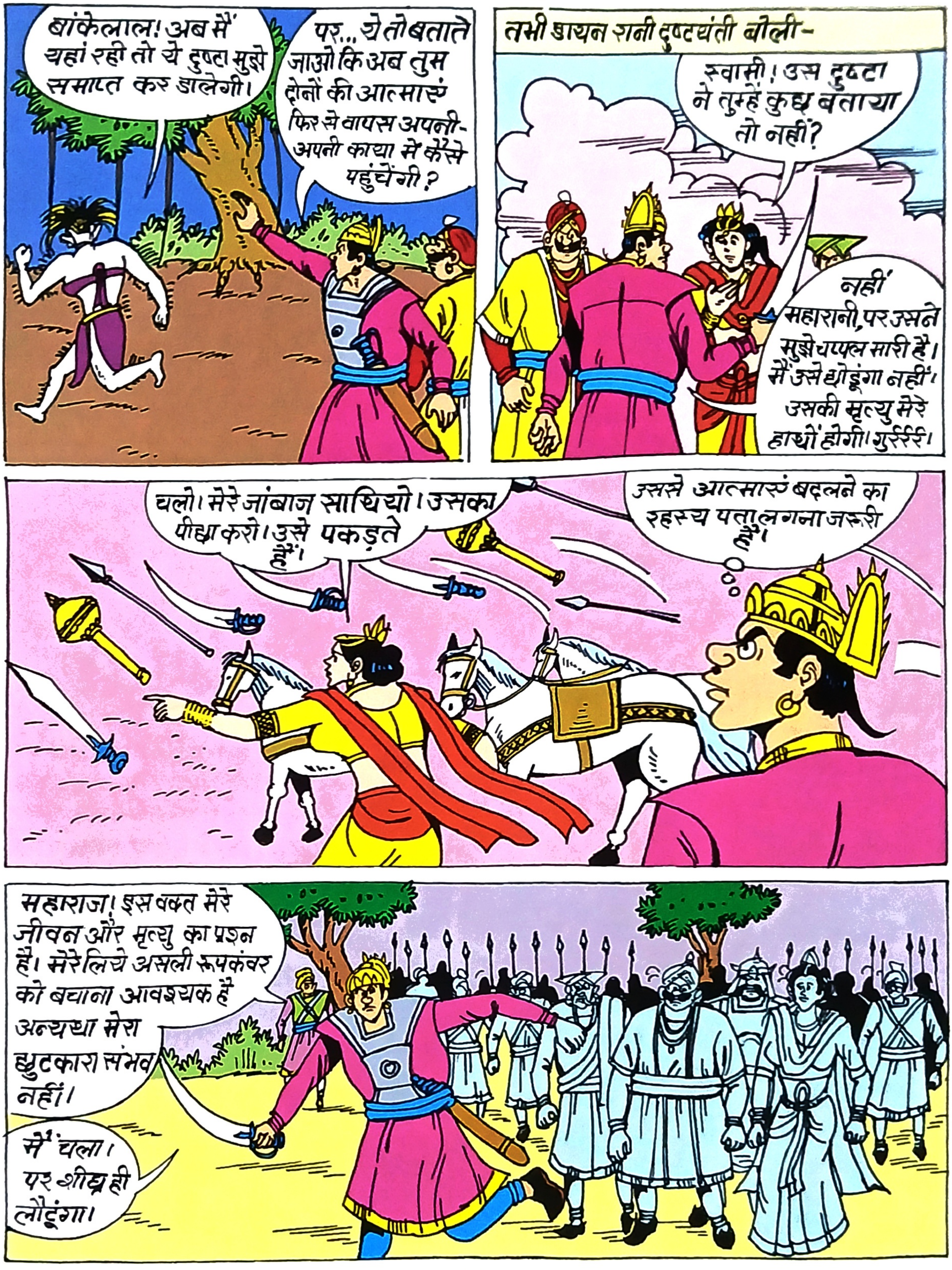

युद्ध देखते हुए चिंतित हो उठे थे महामंत्री -
महारानीजी! हमारे सैनिक बांकेलाल की शस्त्र सेना से पिछड़ रहे हैं।


इधर महाराज व बांकेलाल भी शत्रुओं के समान युद्ध लड़ रहे हैं।
न जाने क्या होगा?
हे भगवान! बांके तो मुझे पहचान ही नहीं रहा। इसे क्या हो गया है?
तभी हवा में सरसराई वह चप्पल-
मेरा निशाना है...
...बांकेलाल!
तड़ाक
वाह! चप्पल निशाने पर लगी। यानी बांके की खोपड़ी पर!

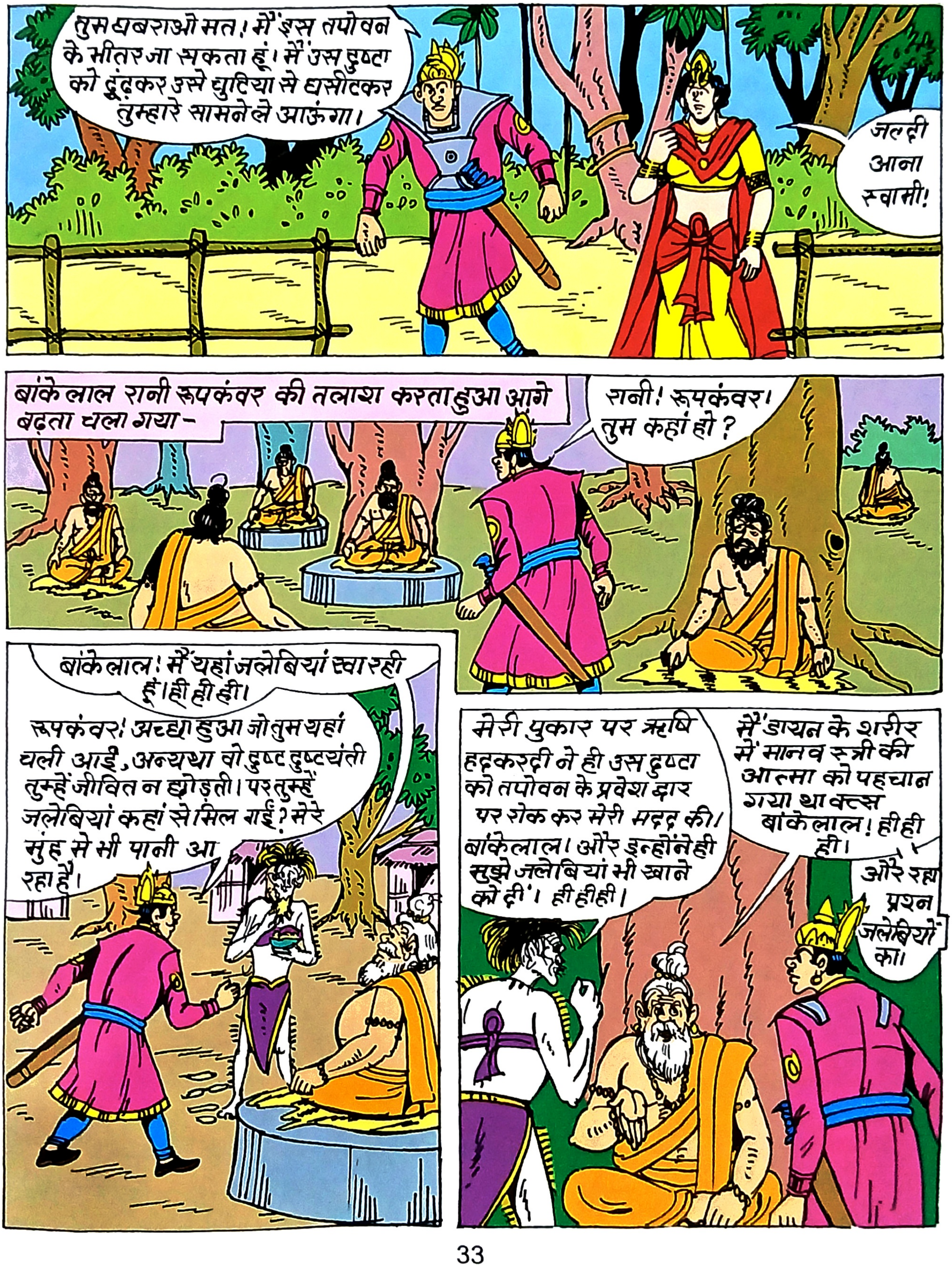

मैं कहां हूं!
अरे! म... सुच्छड़ा म...मेरा मतलब म... महाराज आप। आप यहां छतीसगढ़ में क्या कर रहे हैं?
बांकेलाल! तुमने मुझे पहचान लिया। मैं छतीसगढ़ में नहीं बल्कि तुम विशालगढ़ में हो।
क्या? विशालगढ़? मैं विशालगढ़ में हूं?
हां बांकेलाल! यहां आने के बाद तुम मुझसे युद्ध लड़ रहे थे। पर एक चप्पल पड़ते ही ठीक हो गए।
विक्रमसिंह उसे सब कुछ बताते चले गए।
तब-
ओह! मुझे उस दुष्ट डायन रानी ने सम्मोहित कर दिया था। चप्पल से मेरा सम्मोहन टूट गया। पर मुझे चप्पल किसने मारी?
मैंने!
उस आवाज की स्वामिनी की सूरत ही इतनी भयंकर थी कि दोनों की तलवारें उसकी ओर उठ गईं-
कौन हो तुम?
रानी रूपकंवर!
रूपकंवर!
बांकेलाल तो वह नाम सुनकर चौंक ही पड़ा-


किंतु रूपकंवर जल्दी से बोली -
बांकेलाल! सैनिकों से छिड़ा युद्ध भी रोक दो फिर सब कुछ बताती हूं।
बांकेलाल के आदेश से युद्ध रुक गया तब रूपकंवर ने जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया -
बांकेलाल! दरअसल ये शरीर मेरा नहीं है। ये शरीर उस डायन दुष्टदंती का है, जिसकी आत्मा ने मेरे शरीर पर कब्जा कर रखा है।
उसने न जाने किस विधि से अपनी आत्मा मेरे शरीर में और मेरी आत्मा अपने शरीर में स्थानांतरित करके मुझे एक ताबूत में कैद करके काली गुफा में छोड़ दिया।
लेकिन उसने ये नहीं देखा कि उस गुफा में दीमकों की ढेरों बांबियां थीं, जिन्होंने ताबूत को खा लिया और इस प्रकार मैं आजाद हो गई।
"पर उसे मेरे ताबूत से आजाद होने की खबर हो गई। मैं गुफा से निकल पाती कि तभी वो दुष्टा भी वहां आ पहुंची और"-
तू यहां से बाहर नहीं जा सकती।
क्योंकि तू बाहर आ गई तो मेरे पति बांकेलाल को सारी हकीकत बता देगी। बांकेलाल इस वक्त मेरे बाएं पैर की चप्पल के सम्मोहन से बंधा छत्रपति अभियान पर निकला हुआ है और विशालगढ़ के राजा से युद्ध कर रहा है। मैं नहीं चाहती कि वो ये अभियान छोड़कर वापस आजाए।

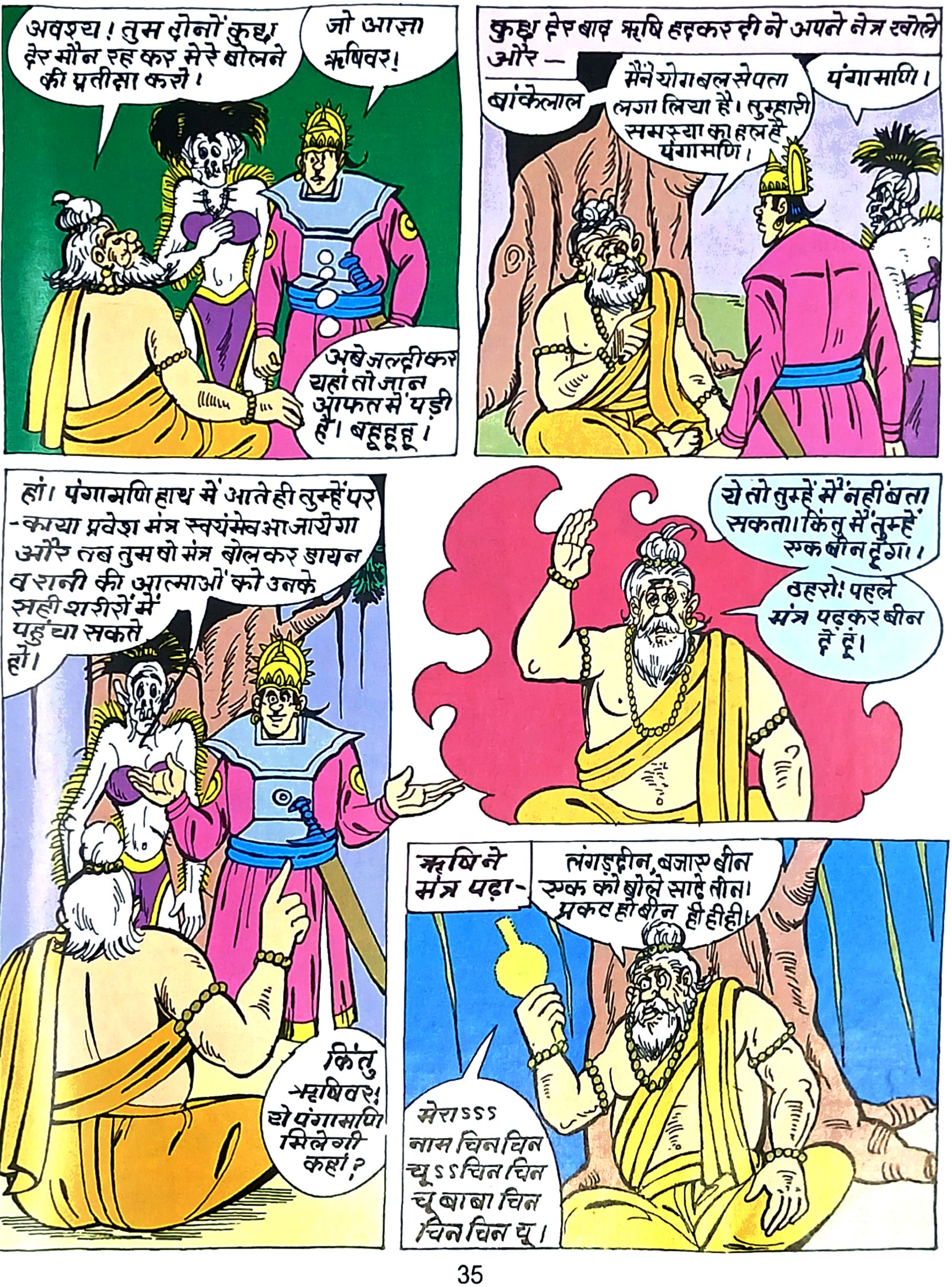

इसलिये तुझे अभी यहीं रहना होगा। मैं तुझे दूसरे ताबूत में बंद करने आई हूं।
तड़ाक
"इस बार उसने मुझे ठोकर जड़ना चाही, तो मैंने उसका पांव पकड़ लिया। इस चक्कर में उसके दाएं पैर की चप्पल मेरे हाथ में आ गई और यह देखकर वो चीख पड़ी।"
मेरे दाएं पांव की चप्पल मुझे वापस कर दे दुष्टा! क्योंकि ये सम्मोहन तोड़ चप्पल है। जिसका खोपड़ी पर प्रहार करके मैं वापस लौटने पर स्वामी बांकेलाल का सम्मोहन तोड़ूंगी।
"बस! इतना सुनते ही मैंने उसे पैरों से पकड़कर घुमा दिया।"
आह!
"और चप्पल लेकर भाग पड़ी।"
यहां आते ही मैंने चप्पल बांकेलाल की खोपड़ी पर मार कर उसका सम्मोहन तोड़ दिया। लेकिन वो डायन भी मेरा पीछा कर रही थी। वो भी यहां आती ही होगी... लो...
वो तो आ भी गई।
दुष्टा! तूने स्वामी को कुछ बताया तो नहीं? अब बता भी नहीं पायेगी। क्योंकि अब तू नहीं बचेगी।


बांकेलाल! अब मैं यहां रही तो ये दुष्टा मुझे समाप्त कर डालेगी।
पर... ये तो बताते जाओ कि अब तुम दोनों की आत्माएं फिर से वापस अपनी-अपनी काया में कैसे पहुंचेंगी?
तभी डायन रानी दुष्टयंती बोली-
स्वामी! उस दुष्टा ने तुम्हें कुछ बताया तो नहीं?
नहीं महारानी, पर उसने मुझे चप्पल मारी है। मैं उसे छोडूंगा नहीं। उसकी मृत्यु मेरे हाथों होगी। गुर्रर्र।
चलो। मेरे जांबाज साथियो। उसका पीछा करो। उसे पकड़ते हैं।
उससे आत्माएं बदलने का रहस्य पता लगना जरूरी है।
महाराज! इस वक्त मेरे जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। मेरे लिये असली रूपकंवर को बचाना आवश्यक है अन्यथा मेरा छुटकारा संभव नहीं।
मैं चला। पर शीघ्र ही लौटूंगा।

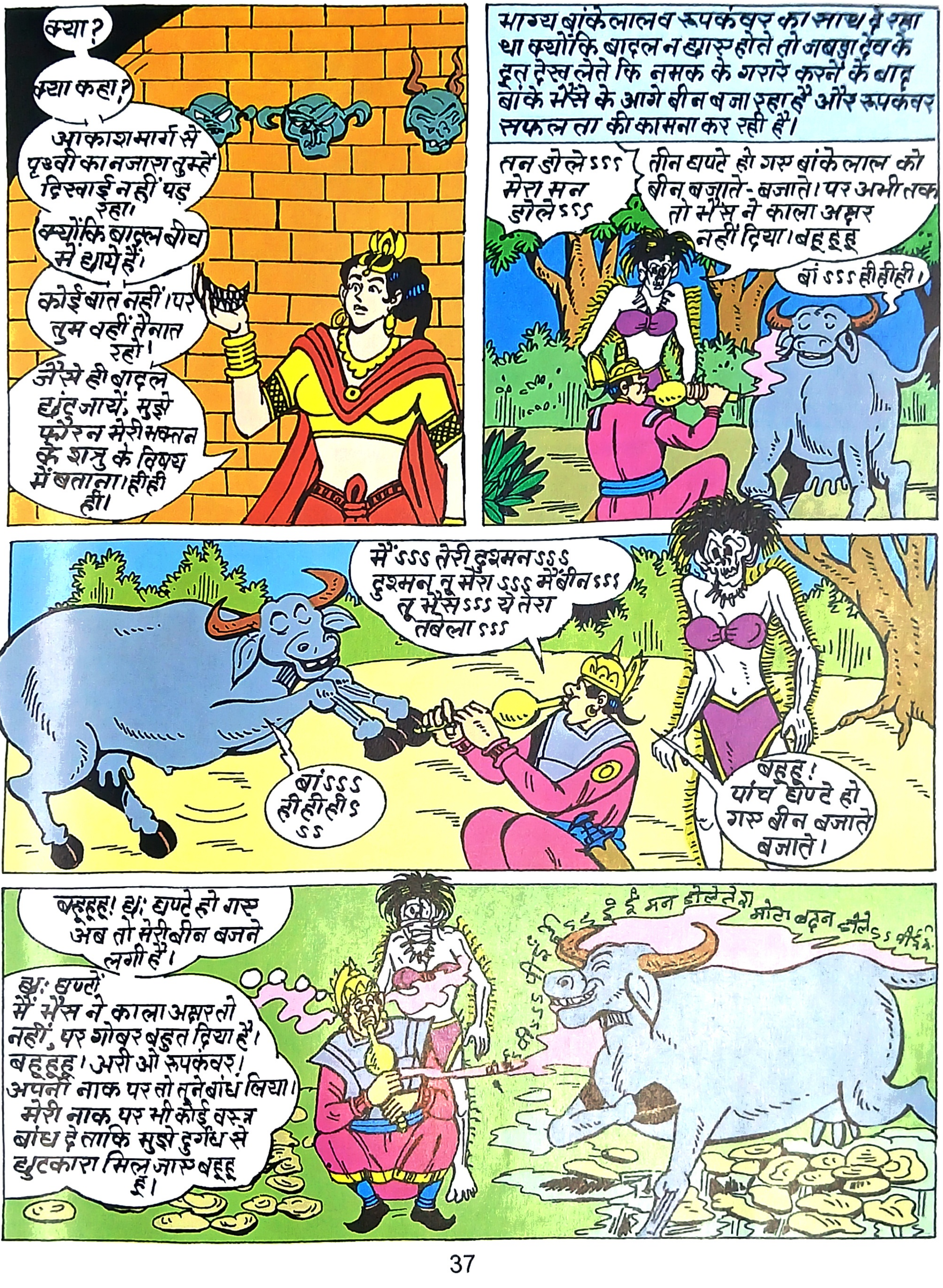

बांकेलाल उसी दिशा में भाग पड़ा, जिधर डायन रानी दुष्टयंती गई थी।
ये रास्ता तो तपोवन को जाता है।
बांकेलाल का सोचना ठीक था। डायन रानी उसे तपोवन के बाहर खड़ी मिली -
रानी! क्या हुआ? तुम यहां क्यों खड़ी हो? वो दुष्टा डायन कहां गई?
वो तपोवन में प्रवेश कर गई है। लेकिन जैसे ही मैंने इसमें प्रवेश करना चाहा तो...
...भयानक अग्नि ने लपलपा कर मेरी राह रोक ली।
मेरे आदेश पर मेरी शस्त्र सेना ने जबरन भीतर प्रवेश की चेष्टा की तो अग्नि ने उन्हें घेर लिया।
आह!
आह मरा!
स्वामी! शस्त्र सेना जलकर राख हो गई?
ओह!
ये तपोवन है। ऋषि-मुनियों की तपस्थली यहां राक्षसों व डायनों का प्रवेश वर्जित है। किंतु फिर वो डायन भीतर कैसे प्रवेश कर गई? ही ही ही।
पता नहीं।


तुम घबराओ मत। मैं इस तपोवन के भीतर जा सकता हूं। मैं उस दुष्टा को ढूंढकर उसे चुटिया से घसीटकर तुम्हारे सामने ले आऊंगा।
जल्दी आना स्वामी!
बांकेलाल रानी रूपकंवर की तलाश करता हुआ आगे बढ़ता चला गया -
रानी! रूपकंवर। तुम कहां हो ?
बांकेलाल! मैं यहां जलेबियां खा रही हूं। ही ही ही।
रूपकंवर! अच्छा हुआ जो तुम यहां चली आई, अन्यथा वो दुष्ट दुष्टयंती तुम्हें जीवित न छोड़ती। पर तुम्हें जलेबियां कहां से मिल गईं? मेरे मुंह से भी पानी आ रहा है।
मेरी पुकार पर ऋषि हदकरदी ने ही उस दुष्टा को तपोवन के प्रवेश द्वार पर रोक कर मेरी मदद की। बांकेलाल। और इन्होंने ही मुझे जलेबियां भी खाने को दीं। ही ही ही।
मैं डायन के शरीर में मानव स्त्री की आत्मा को पहचान गया था वत्स बांकेलाल! ही ही ही।
और रहा प्रश्न जलेबियों का।

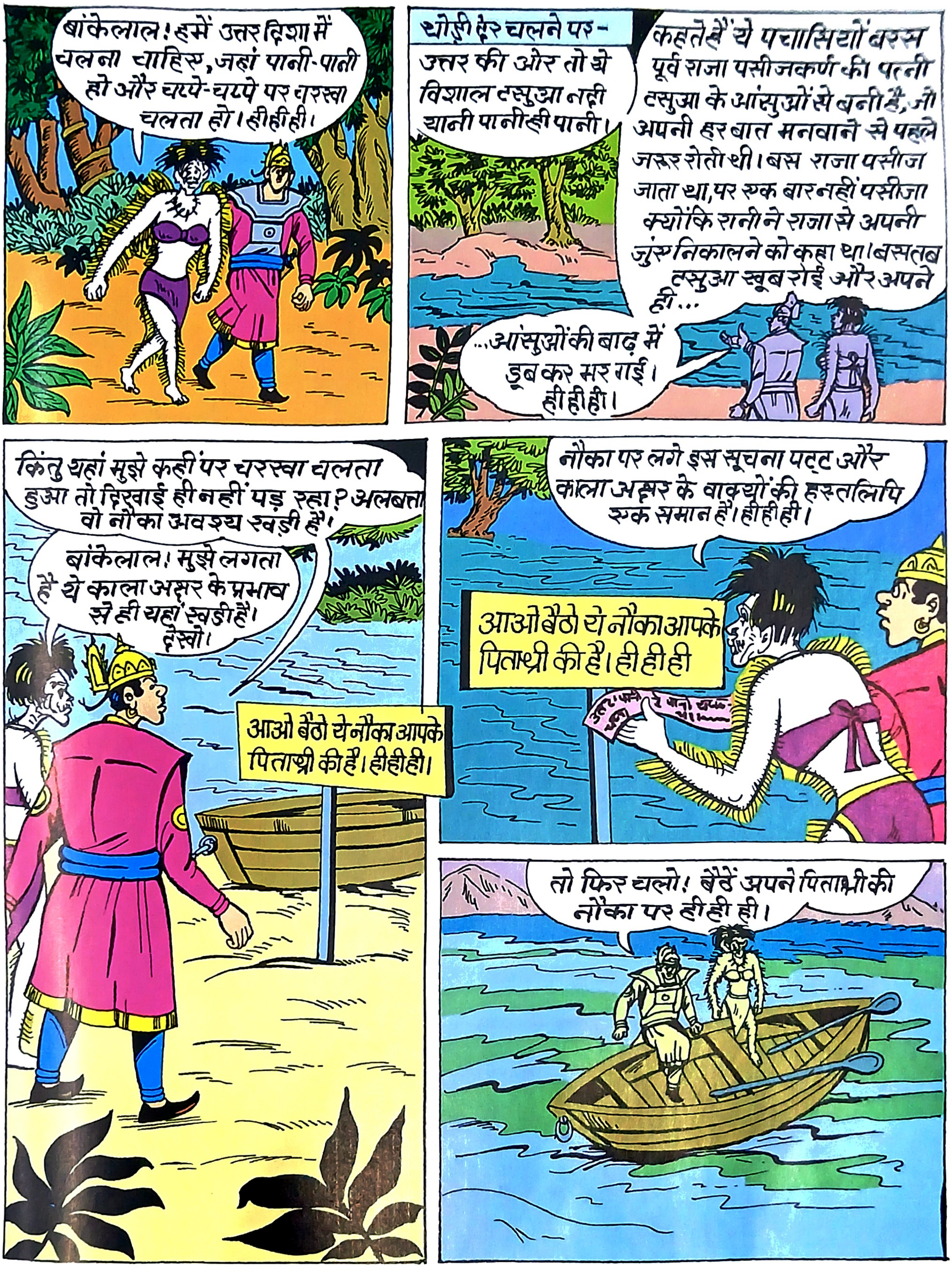

तो बांकेलाल! श्रद्धालु लोग रोजाना फलों व मिठाइयों की भेंट दे जाते हैं। मैं तो चौबीस घण्टों में सिर्फ तेईस घण्टे ही खाता हूं। एक घण्टे का खाना बच जाता है। थोड़ी देर पहले एक भक्त मुझे जलेबियां दे गया। ही ही ही।
दिल तो कर रहा था कि खा लूं। बार-बार जीभ लपलपाने के चक्कर में जीभ भी दुख गई। ही ही ही।
किंतु हम ऋषि-मुनि ज्यादा का लालच नहीं करते। तभी ये आ गई और मैंने मन मसोसकर जलेबियां इसे खाने को दे दीं लो तुम भी खाओ।
वाह!
जलेबियां खाने के पश्चात–
ऋषिवर! पत्ता कहां फेंकें?
कहीं भी फेंक दो, चींटे व चींटियां पत्ते पर लगी चाशनी चूसकर प्रसन्न होंगे। मैं भी ऐसे ही फेंकता हूं। ही ही ही।
तब
ऋषिवर! जलेबियां खाने के दौरान मैंने अपनी पूरी दास्तान आपको सुना दी है।
कृपा हमें इस संकट से निकलने का कोई उपाय बताएं।

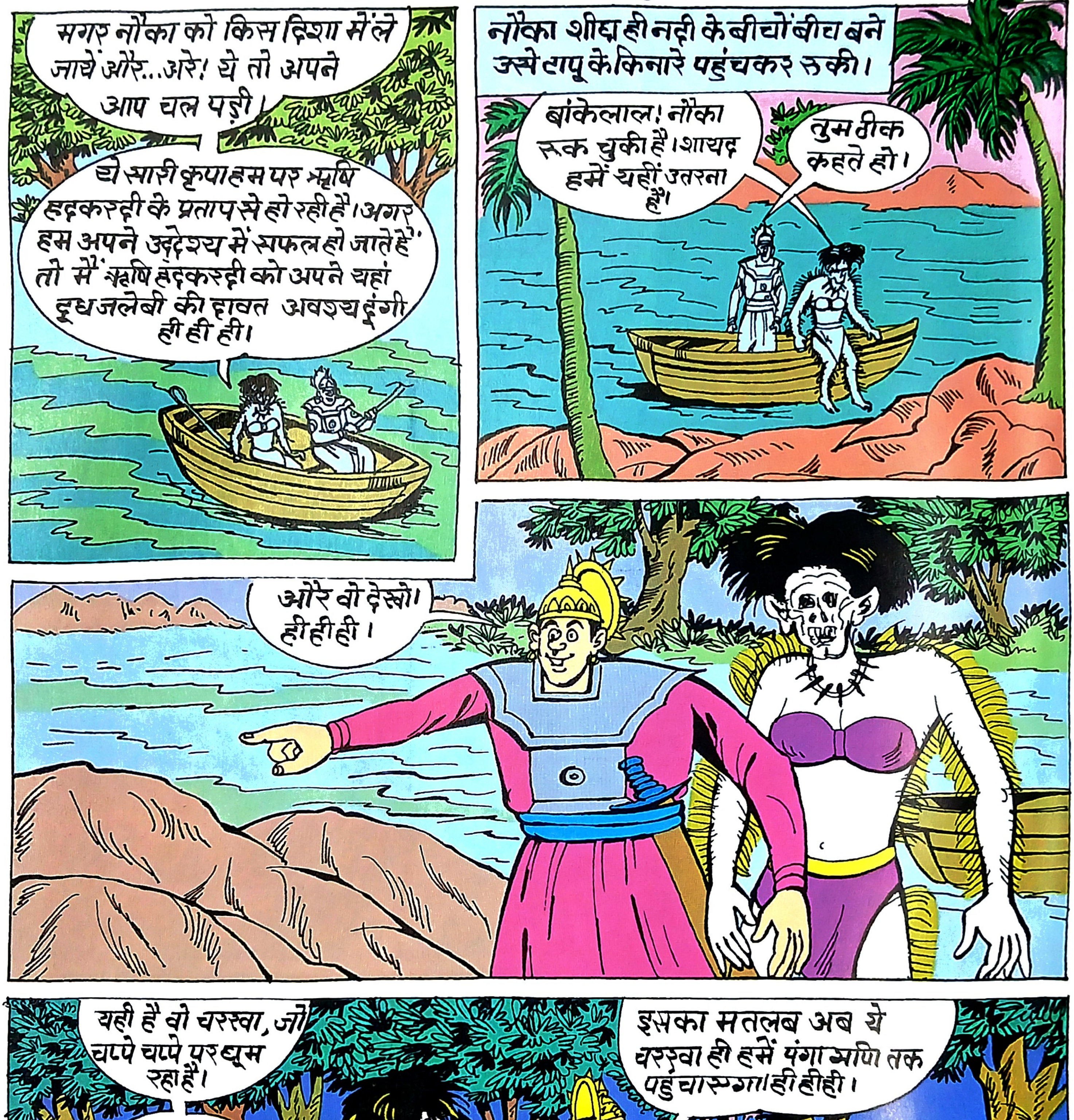

अवश्य! तुम दोनों कुछ देर मौन रह कर मेरे बोलने की प्रतीक्षा करो।
जो आज्ञा ऋषिवर!
अबे जल्दी कर यहां तो जान आफत में पड़ी है। बहूहूहू।
कुछ देर बाद ऋषि हदकर दी ने अपने नेत्र खोले और —
बांकेलाल
मैंने योग बल से पता लगा लिया है। तुम्हारी समस्या का हल है पंगामणि।
पंगामणि।
हां। पंगामणि हाथ में आते ही तुम्हें पर-काया प्रवेश मंत्र स्वयंमेव आ जायेगा और तब तुम वो मंत्र बोल कर डायन व रानी की आत्माओं को उनके सही शरीरों में पहुंचा सकते हो।
किंतु ऋषिवर! वो पंगामणि मिलेगी कहां?
ये तो तुम्हें मैं नहीं बता सकता। किंतु मैं तुम्हें एक बीन दूंगा।
ठहरो! पहले मंत्र पढ़कर बीन दे दूं।
ऋषि ने मंत्र पढ़ा-
लंगड़दीन, बजाए बीन एक को बोले साढ़े तीन। प्रकट हो बीन ही ही ही।
मेरा SSS नाम चिन चिन चू SS चिन चिन चू बाबा चिन चिन चिन चू।


ये लो बांकेलाल! नमक के गरारे करने के बाद इसी बीन को जब तुम किसी भैंस के आगे बजाओगे तो वो तुम्हें काला अक्षर देगी। जैसे ही तुम्हें काला अक्षर प्राप्त होगा, बीन गायब हो जायेगी।
उस काले अक्षर का अर्थ समझ कर तुम आगे बढ़ोगे तो अवश्य ही पंगामणि तक पहुंच जाओगे।
किंतु मुझे बीन बजानी तो आती नहीं। बहूहूहू।
ये जादुई बीन है। मुंह से लगते ही बजने लगती है। अब तुम जाओ। क्योंकि मेरा भोजन का समय हो गया है। और मैं तेइस घण्टे किसी से बात नहीं करता। ही ही ही।
बांकेलाल डायन के साथ वहां से चल पड़ा।
आओ! भैंस की खोज करें।
हां! जल्दी चलो। कहीं ऐसा न हो कि पंगामणि तक पहुंचने से पूर्व वो दुष्टा दुष्टयंती ही हम तक पहुंच जाए और हमारे सारे प्रयास विफल हो जाएं।
रूपकंवर का अनुमान गलत नहीं था। डायन-रानी छत्तीसगढ़ वापस पहुंच चुकी थी।
छत्तीस दांतों का जबड़ा। कर दुश्मन का कबाड़ा। ही ही ही।
मैंने बड़े कठिन प्रयासों से तुझे हासिल किया है।
हे, जबड़ा देव! प्रसन्न हो। जबड़े में आ। प्रसन्न होकर मुझे बता कि मेरी शत्रु अभी तक स्वामी के हाथ लगी है या नहीं
किट किट किट ठहर जा, दुष्टयंती। बताता हूं मैं अपने दूतों को आकाश मार्ग से पता लगाने के लिए भेज रहा हूं। जाओ दूतों जाओ जल्दी। बताओ

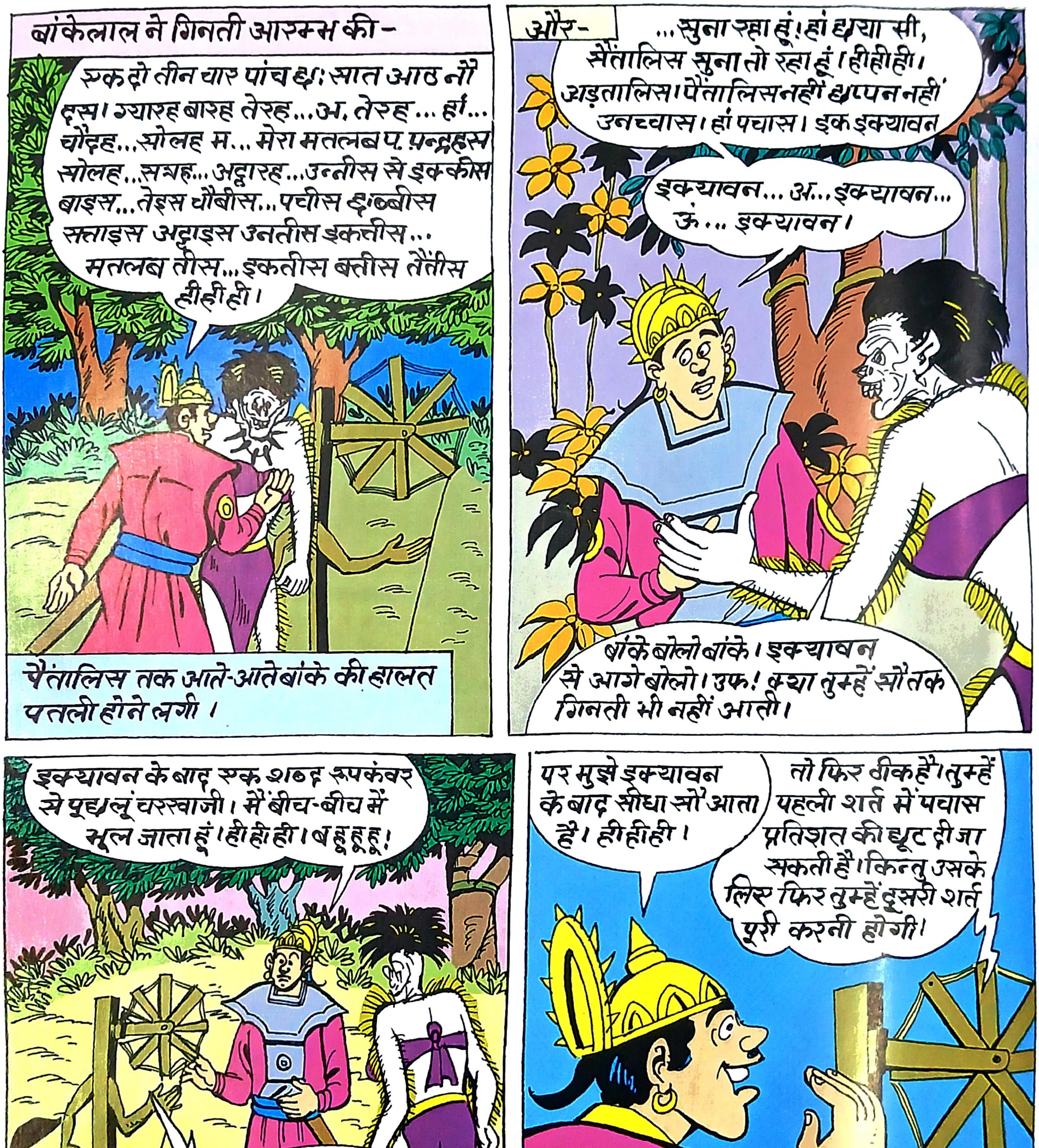

क्या?
क्या कहा?
आकाशमार्ग से पृथ्वी का नजारा तुम्हें दिखाई नहीं पड़ रहा।
क्योंकि बादल बीच से छाये हैं।
कोई बात नहीं। पर तुम वहीं तैनात रहो।
जैसे ही बादल छंट जायें, मुझे फौरन मेरी भक्तन के शत्रु के विषय में बताना। हीही ही।
भाग्य बांकेलाल व रूपकंवर का साथ दे रहा था क्योंकि बादल न छाये होते तो जबड़ा देव के दूत देख लेते कि नमक के गरारे करने के बाद बांके भैंसे के आगे बीन बजा रहा है और रूपकंवर सफलता की कामना कर रही है।
तन डोले ऽऽऽ मेरा मन डोले ऽऽऽ
तीन घण्टे हो गए बांकेलाल को बीन बजाते-बजाते। पर अभी तक तो भैंस ने काला अक्षर नहीं दिया। बहूहूहू
बां ऽऽऽ हीहीही।
मैं ऽऽऽ तेरी दुश्मन ऽऽऽ दुश्मन तू मेरा ऽऽऽ मैं बीन ऽऽऽ तू भैंस ऽऽऽ ये तेरा तबेला ऽऽऽ
बांऽऽऽ हीहीहीऽ ऽऽ
बहूहू! पांच घण्टे हो गए बीन बजाते बजाते।
बहूहूहू! छः घण्टे हो गए अब तो मेरी बीन बजने लगी है।
छः घण्टों में भैंस ने काला अक्षर तो नहीं, पर गोबर बहुत दिया है। बहूहूहू। अरी ओ रूपकंवर! अपनी नाक पर तो तूने बांध लिया। मेरी नाक पर भी कोई वस्त्र बांध दे ताकि मुझे दुर्गंध से छुटकारा मिल जाए बहूहू हू।

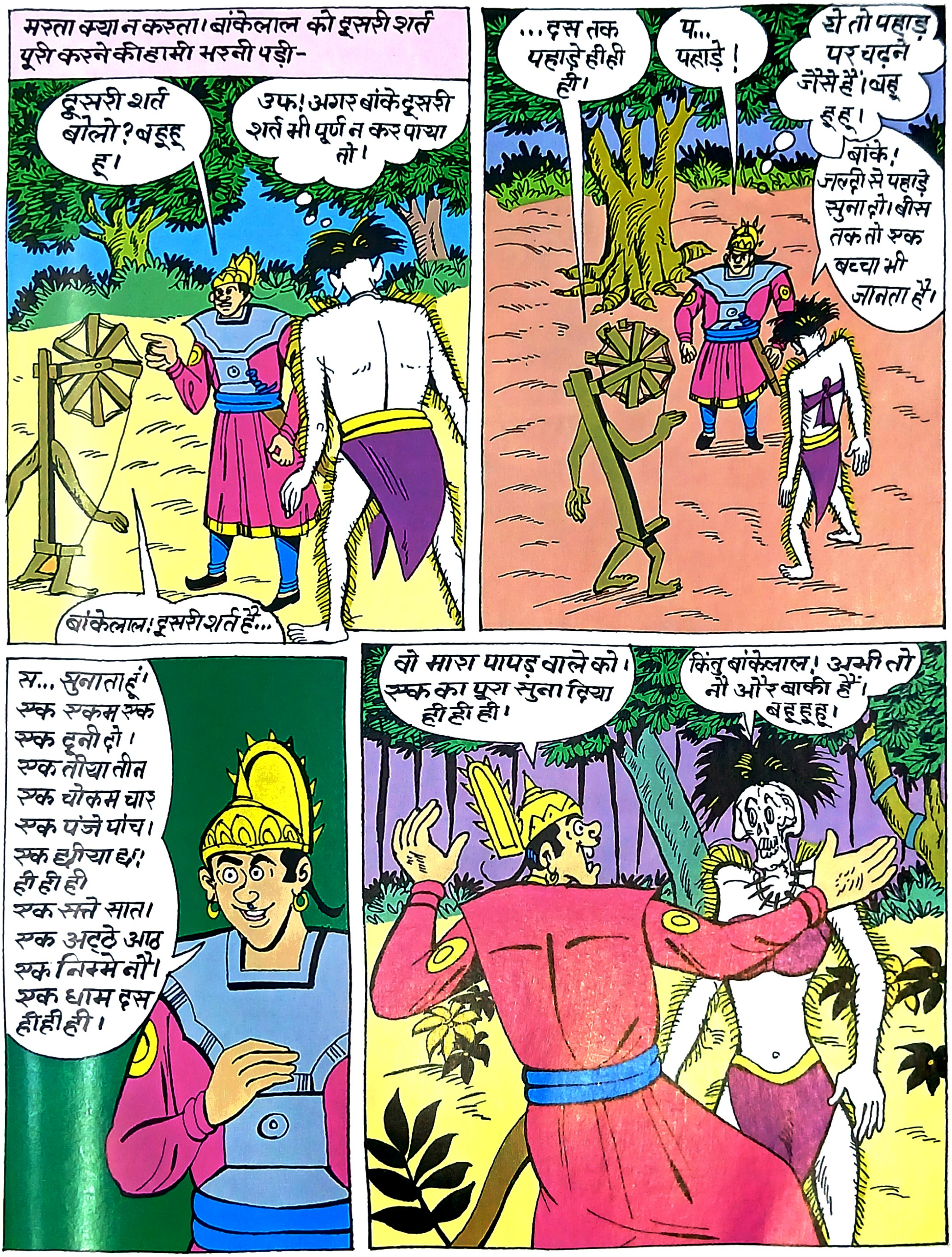

बड़े मजे ले लिये! हीहीही चलो। मैं दे देती हूं काला अक्षर। ही ही ही उबैक ऽऽऽ
तू नागिन ऽऽऽ मैं नेवला ऽऽऽ
बांकेलाल! वो देखो। भैंस ने काला अक्षर दे दिया।
उत्तर: पानी पानी में, चप्पा चप्पा चरखा चले
बांकेलाल! इस लिखावट का क्या अर्थ हो सकता है? हीहीही।
ये किसी प्रश्न का उत्तर है।
पर हमने तो कोई प्रश्न पूछा ही नहीं।
तो फिर उत्तर का अर्थ प्रश्न का उत्तर नहीं, बलिक दिशा से होना चाहिए।
हमें तो पंगामणि का पता चाहिए।


बांकेलाल! हमें उत्तर दिशा में चलना चाहिए, जहां पानी-पानी हो और चप्पे-चप्पे पर चरखा चलता हो। हीहीही।
थोड़ी देर चलने पर -
उत्तर की ओर तो ये विशाल टसुआ नदी यानी पानी ही पानी।
कहते हैं ये पचासियों बरस पूर्व राजा पसीजकर्ण की पत्नी टसुआ के आंसुओं से बनी है, जो अपनी हर बात मनवाने से पहले जरूर रोती थी। बस राजा पसीज जाता था, पर एक बार नहीं पसीजा क्योंकि रानी ने राजा से अपनी जुंए निकालने को कहा था। बस तब टसुआ खूब रोई और अपने ही ...
...आंसुओं की बाढ़ में डूब कर मर गई। ही ही ही।
किंतु यहां मुझे कहीं पर चरखा चलता हुआ तो दिखाई ही नहीं पड़ रहा? अलबत्ता वो नौका अवश्य खड़ी है।
बांकेलाल! मुझे लगता है ये काला अक्षर के प्रभाव से ही यहां खड़ी है। देखो।
आओ बैठो ये नौका आपके पिताश्री की है। हीहीही।
नौका पर लगे इस सूचना पट्ट और काला अक्षर के वाक्यों की हस्तलिपि एक समान है। ही ही ही।
आओ बैठो ये नौका आपके पिताश्री की है। ही ही ही
तो फिर चलो! बैठें अपने पिताश्री की नौका पर ही ही ही।

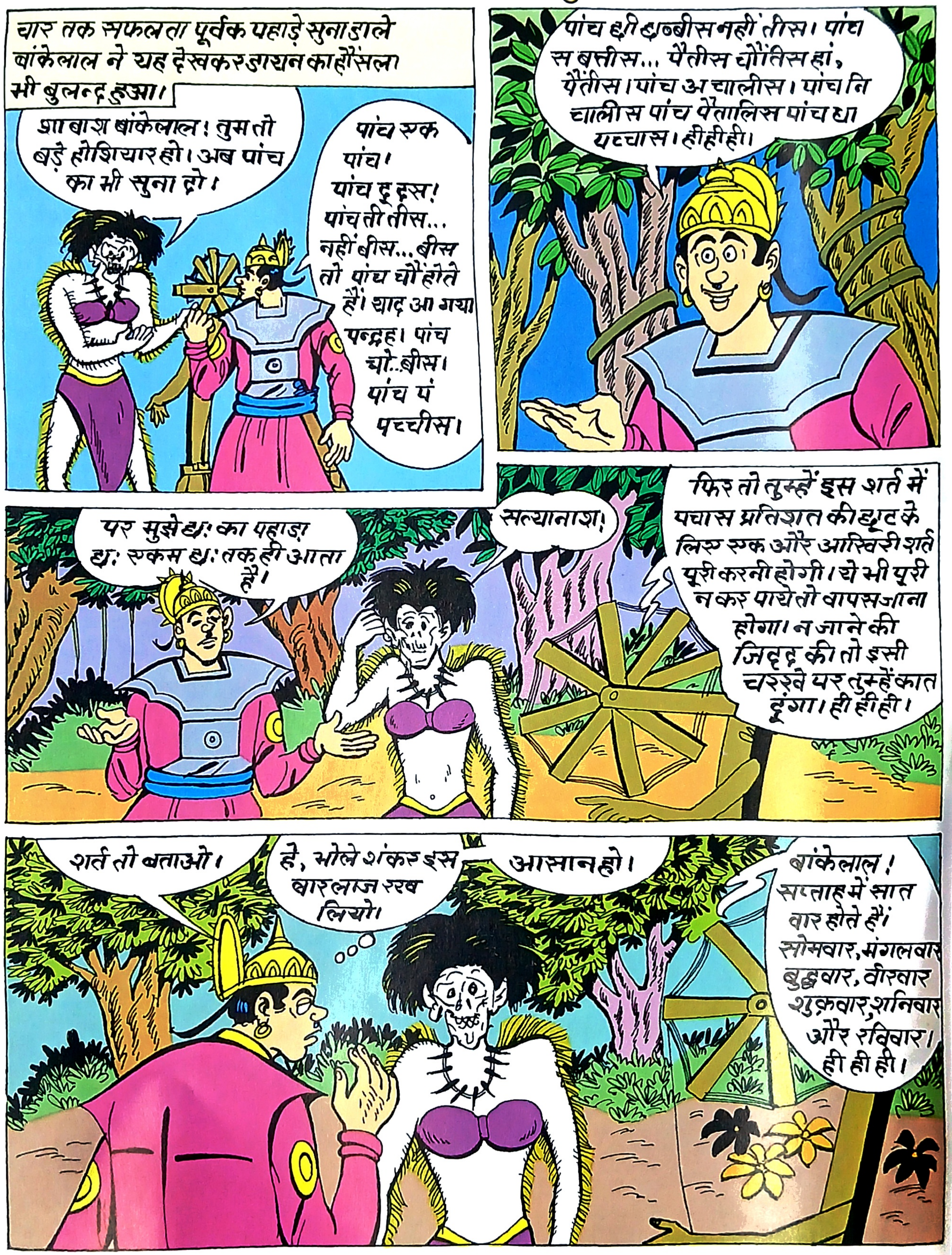

मगर नौका को किस दिशा में ले जायें और...अरे! ये तो अपने आप चल पड़ी।
ये सारी कृपा हम पर ऋषि हदकरदी के प्रताप से हो रही है। अगर हम अपने उद्देश्य में सफल हो जाते हैं तो मैं ऋषि हदकरदी को अपने यहां दूधजलेबी की दावत अवश्य दूंगी ही ही ही।
नौका शीघ्र ही नदी के बीचोंबीच बने उस टापू के किनारे पहुंचकर रुकी।
बांकेलाल! नौका रुक चुकी है। शायद हमें यहीं उतरना है।
तुम ठीक कहते हो।
और वो देखो। ही ही ही।
यही है वो चरखा, जो चप्पे चप्पे पर घूम रहा है।
उस काला अक्षर का अर्थ इसी से था। ही ही ही।
इसका मतलब अब ये चरखा ही हमें पंगा आपि तक पहुंचाएगा। ही ही ही।


चरखा हमारी ओर आ रहा है!
चरखा उनके निकट पहुंचा -
मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं? ही ही ही।
हमें पंगा मणि चाहिए।
क्या तुम हमें वहां तक पहुंचा सकते हो, जहां हमें पंगामणि मिले।
अवश्य! लेकिन तुममें से एक को मेरी एक शर्त पूरी करनी होगी। ही ही ही।
बांकेलाल! पंगामणि तो हमें हर हाल में चाहिए।
हमें इसकी शर्त तो पूरी करनी ही होगी।
हां! शर्त बोलो। मर्द होने के नाते मैं उसे पूरी करूंगा।
तो फिर सुनाओ एक से सौ तक की गिनती।
सौ तक गिनती।
वाह! इतनी आसान शर्त। बांकेलाल जल्दी से पांच सौ तक गिनती सुना दो।


बांकेलाल ने गिनती आरम्भ की -
एक दो तीन चार पांच छः सात आठ नौ दस। ग्यारह बारह तेरह... अ. तेरह... हां... चौदह... सोलह म... मेरा मतलब प. पन्द्रह सोलह... सत्रह... अट्ठारह... उन्नीस से इककीस बाइस... तेइस चौबीस... पचीस छब्बीस सत्ताइस अट्ठाइस उनतीस इकतीस... मतलब तीस... इकतीस बतीस तैंतीस हीहीही।
पैंतालिस तक आते-आते बांके की हालत पतली होने लगी।
और-
...सुना रहा हूं। हां छाया सी, सैंतालिस सुना तो रहा हूं। हीहीही। अड़तालिस। पैंतालिस नहीं छप्पन नहीं उनचास। हां पचास। इक इक्यावन
इक्यावन... अ... इक्यावन... ऊं... इक्यावन।
बांके बोलो बांके। इक्यावन से आगे बोलो। उफ! क्या तुम्हें सौ तक गिनती भी नहीं आती।
इक्यावन के बाद एक शब्द रूपकंवर से पूछ लूं चरखाजी। मैं बीच-बीच में भूल जाता हूं। हीहीही। बहूहूहू!
अगर रूपकंवर पहले चाहती तो शर्त को वो भी पूरा कर सकती थी। पर तुम्हारी स्वीकारोक्ति के पश्चात अब ये मुमकिन नहीं। अब शर्त तुम्हें ही पूरी करनी होगी।
पर मुझे इक्यावन के बाद सीधा सौ आता है। हीहीही।
तो फिर ठीक है। तुम्हें पहली शर्त में पचास प्रतिशत की छूट दी जा सकती है। किन्तु उसके लिए फिर तुम्हें दूसरी शर्त पूरी करनी होगी।



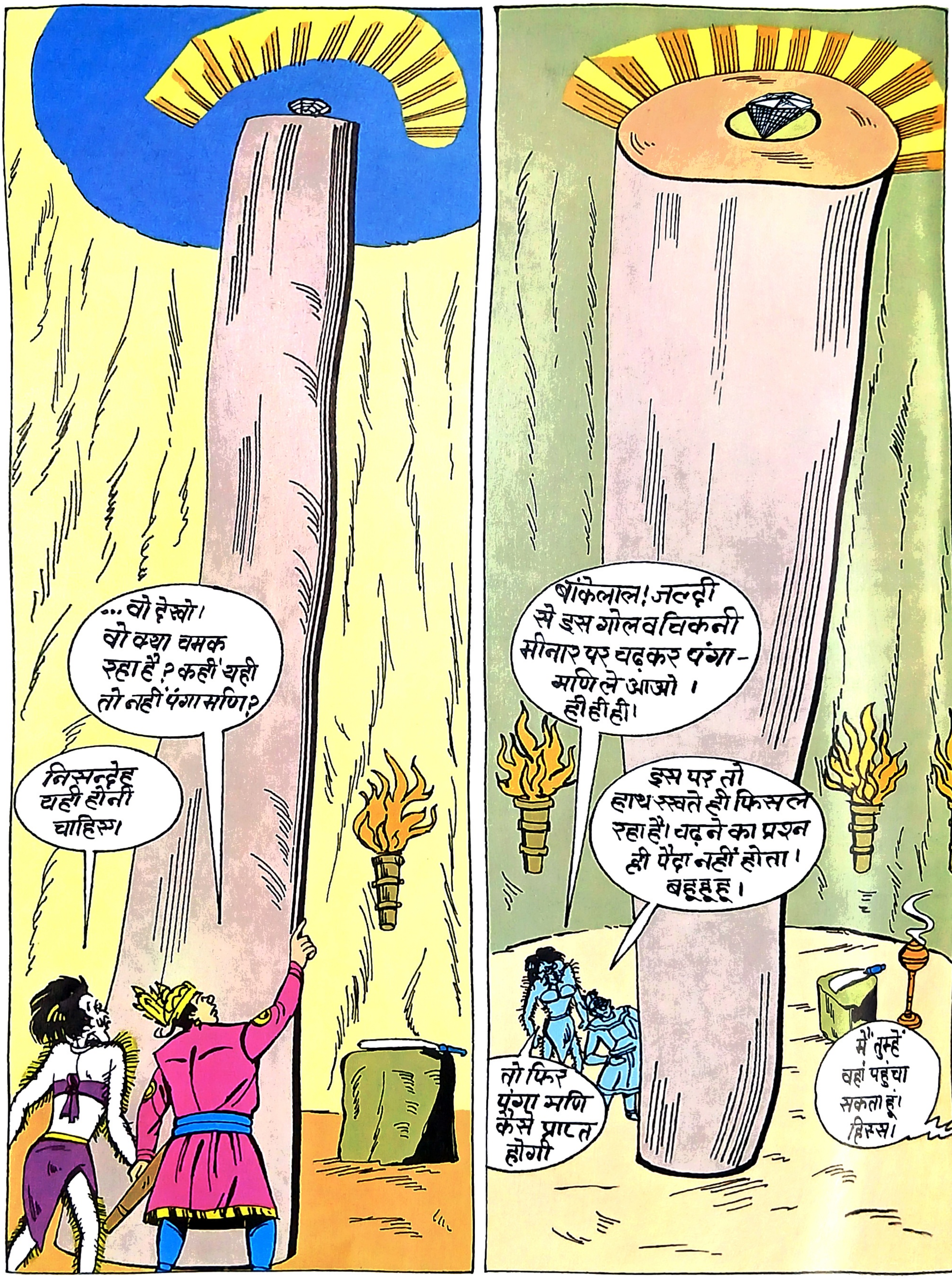
मरता क्या न करता। बांकेलाल को दूसरी शर्त पूरी करने की हामी भरनी पड़ी-
दूसरी शर्त बोलो? बहुहु हू।
उफ! अगर बांके दूसरी शर्त भी पूर्ण न कर पाया तो।
बांकेलाल! दूसरी शर्त है...
...दस तक पहाड़े ही ही ही।
प... पहाड़े!
ये तो पहाड़ पर चढ़ने जैसे हैं। बहु हु हू।
बांके! जल्दी से पहाड़े सुना दो। बीस तक तो एक बच्चा भी जानता है।
स... सुनाता हूं। एक एकम एक एक दूनी दो। एक तीया तीन एक चोकम चार एक पंजे पांच। एक छीया छः ही ही ही एक सत्ते सात। एक अट्ठे आठ एक निम्मे नौ। एक धाम दस ही ही ही।
वो मारा पापड़ वाले को। एक का पूरा सुना दिया ही ही ही।
किंतु बांकेलाल! अभी तो नौ और बाकी हैं। बहुहुहु।

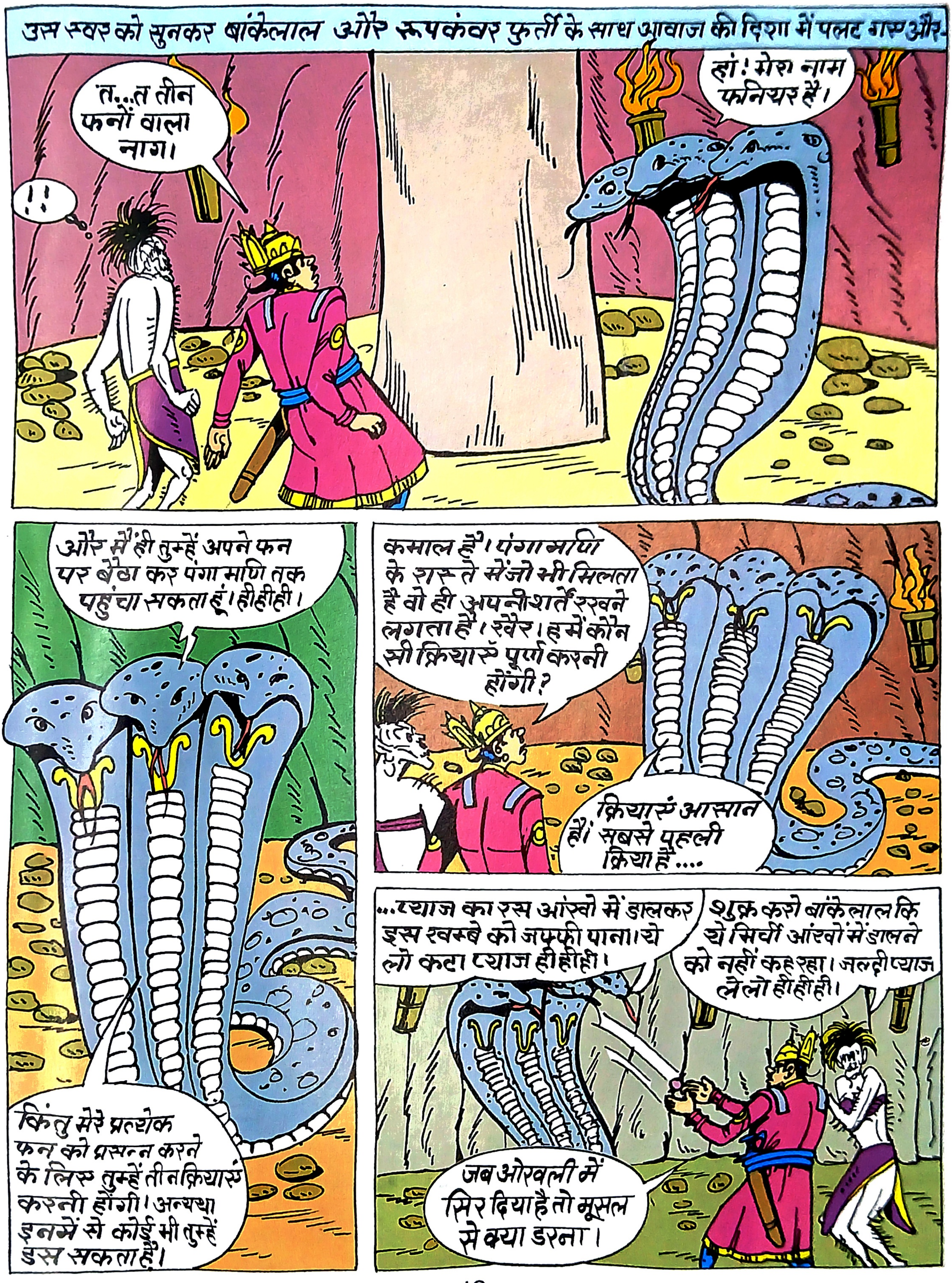

चार तक सफलता पूर्वक पहाड़े सुना डाले बांकेलाल ने यह देखकर डायन का हौंसला भी बुलन्द हुआ।
शाबाश बांकेलाल! तुम तो बड़े होशियार हो। अब पांच का भी सुना दो।
पांच एक पांच। पांच दू दस! पांच ती तीस... नहीं बीस... बीस तो पांच चौ होते हैं। याद आ गया पन्द्रह। पांच चौ..बीस। पांच पं पच्चीस।
पांच छी छब्बीस नहीं तीस। पांच स बत्तीस... पैंतीस चौंतीस हां, पैंतीस। पांच अ चालीस। पांच नि चालीस पांच पैंतालिस पांच धा पच्चास। हीहीही।
पर मुझे छः का पहाड़ा छः एकम छः तक ही आता है।
सत्यानाश!
फिर तो तुम्हें इस शर्त में पचास प्रतिशत की छूट के लिए एक और आखिरी शर्त पूरी करनी होगी। ये भी पूरी न कर पाये तो वापस जाना होगा। न जाने की जिद्द की तो इसी चरखे पर तुम्हें कात दूंगा। ही ही ही।
शर्त तो बताओ।
हे, भोले शंकर इस बार लाज रख लियो।
आसान हो।
बांकेलाल! सप्ताह में सात वार होते हैं। सोमवार, मंगलवार बुद्धवार, वीरवार शुक्रवार, शनिवार और रविवार। ही ही ही।


अब तुम्हें इन वारों के अलावा जो सात वार होते हैं वो बताने हैं। ही ही ही। चल शुरू हो जल्दी।
सात और वार
बाप रे!
होते हैं बांकेलाल! होते हैं। एक तो ध्यान में रखते हैं।
तलवार! ही ही ही!
बिल्कुल ठीक!
एक से नौका भी तो खेते हैं।
पतवार। ही ही ही।
बिल्कुल ठीक।
सोचो बांकेलाल, सोचो। सब एक साथ, एक जुट होकर रहते हैं।
परिवार।
ये भी ठीक है चार और बताने हैं!


सजा उसे ही मिलती है। ही ही ही
कुसूरवार! ही ही ही
ठीक!
स्त्रियां पहनती हैं बांकेलाल।
सलवार। ये तो मुझे पता था। ही ही ही।
ये भी ठीक है। दो वार बचे।
एक, दो, तीन, चार कोई भी चीज रखते जाते हैं ही ही ही।
क्रमवार! ही ही ही!
यह भी ठीक है।
आखिरी वो वाला वार जो किसी शस्त्र से करते हैं।
वाह, तुमने बिलकुल ठीक जवाब दिया बांकेलाल! हालांकि रूपकंवर ने तुम्हारी मदद की हैं किंतु वारों के नाम तो तुमने ही बताए हैं। ही ही ही।
तो फिर जल्दी से बताओ कि पंगामणि कहां है?

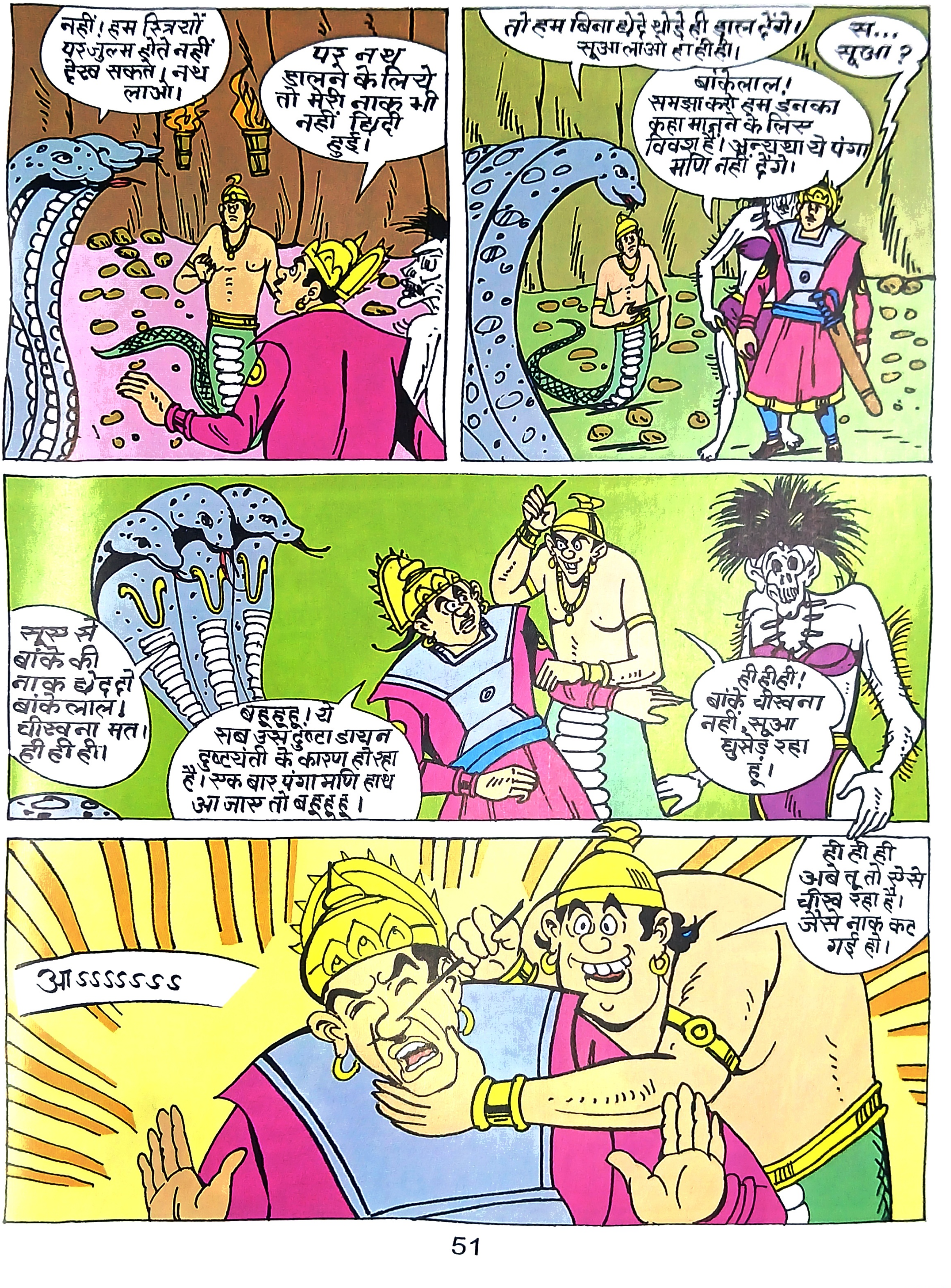

आओ मेरे साथ मेरे पीछे-पीछे। ही हीही
इस पाताल बाम्बी में चले जाओ। पंगा-मणि तुम्हें यहीं मिलेगी।
जल्दी चलो बांकेलाल!
न जाने कब मिलेगी पंगा मणि और कब दूर होंगी हम दोनों की मुश्किलें। बहूहूहू।
ये सीढ़ियां तो खत्म होने को ही नहीं आ रहीं।
बेफिक्र रहो चरखा। वह हमें किसी गलत स्थान पर नहीं भेज सकता।
लो! तुमने कहा और सीढ़ियां समाप्त हो गईं।
और...और..


...वो देखो। वो क्या चमक रहा है? कहीं यही तो नहीं पंगा मणि?
निसन्देह यही होनी चाहिए।
बांकेलाल! जल्दी से इस गोल व चिकनी मीनार पर चढ़कर पंगा-मणि ले आओ। ही ही ही।
इस पर तो हाथ रखते ही फिसल रहा है। चढ़ने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। बहुहुहु।
तो फिर पुंगा मणि कैसे प्राप्त होगी
मैं तुम्हें वहां पहुंचा सकता हूं। हिस्स।

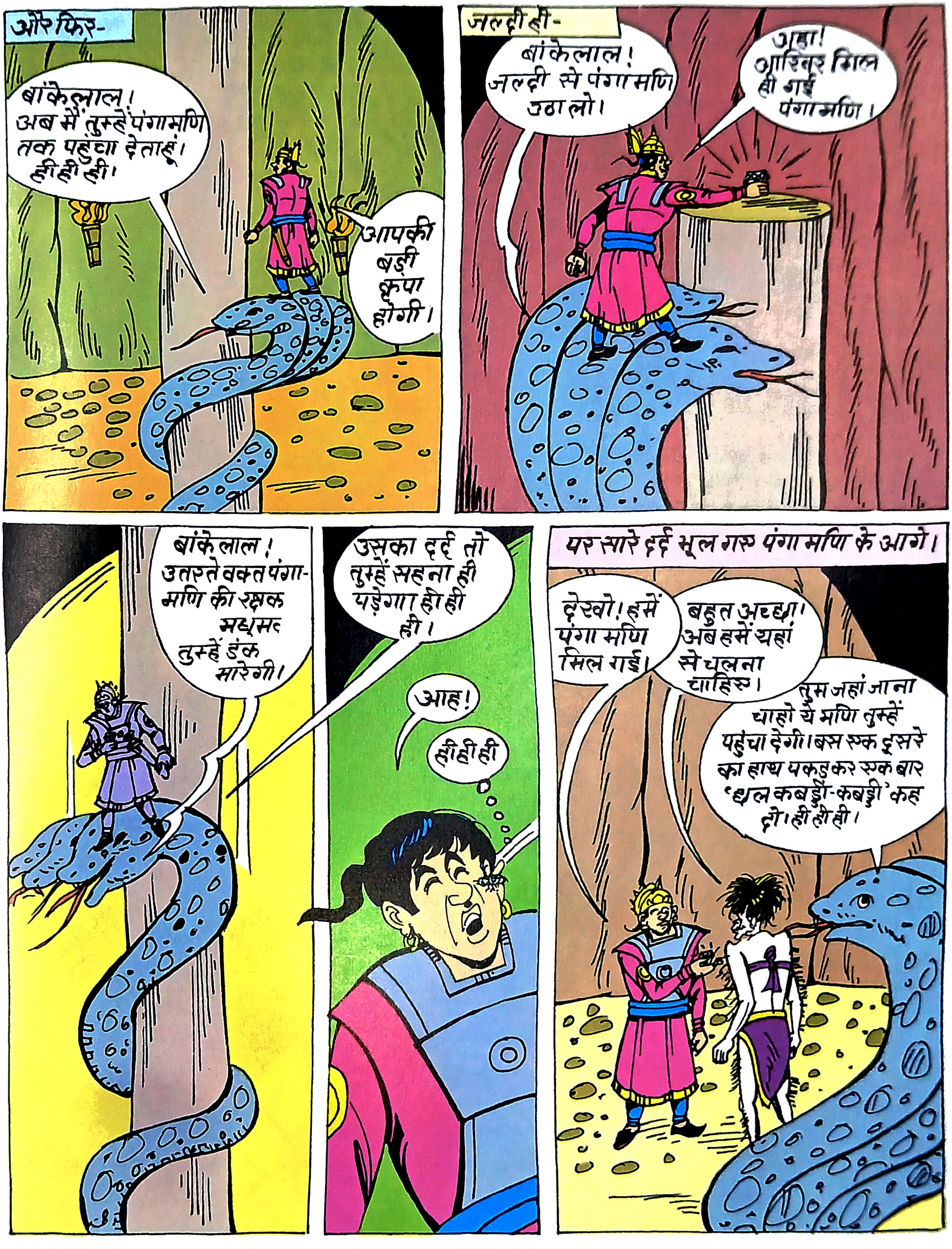

उस स्वर को सुनकर बांकेलाल और रूपकंवर फुर्ती के साथ आवाज की दिशा में पलट गए और-
!!
त...त तीन फनों वाला नाग।
हां! मेरा नाम फनियर है।
और मैं ही तुम्हें अपने फन पर बैठा कर पंगा मणि तक पहुंचा सकता हूं। हीहीही।
किंतु मेरे प्रत्येक फन को प्रसन्न करने के लिए तुम्हें तीन क्रियाएं करनी होंगी। अन्यथा इनमें से कोई भी तुम्हें डस सकता है।
कमाल है। पंगा मणि के रास्ते में जो भी मिलता है वो ही अपनी शर्तें रखने लगता है। खैर। हमें कौन सी क्रियाएं पूर्ण करनी होंगी?
क्रियाएं आसान हैं। सबसे पहली क्रिया है....
...प्याज का रस आंखो में डालकर इस खम्बे को जफ्फी पाना। ये लो कटा प्याज हीहीही।
शुक्र करो बांकेलाल कि ये मिर्ची आंखो में डालने को नहीं कह रहा। जल्दी प्याज ले लो हीहीही।
जब ओखली में सिर दिया है तो मूसल से क्या डरना।



बांकेलाल ने प्याज का रस अपनी आंखों में निचोड़ा –
बहुहुहु! मुझे तो वैसे ही रोना छूट रहा है। हे। रुलाने के प्याज के रस की क्या आवश्यकता थी? बहुहुहु।
हिम्मत से काम लो बांकेलाल चलो तुम्हें खम्बे तक पहुंचा दूं।
बांकेलाल! ये रहा वो खम्बा जिसकी तुम्हें जफ्फी पानी है। हीहीही।
चल बेटा बांके! पा ले जफ्फी। क्योंकि पत्नी की गुलामी करते हुए बार-बार रोने से ये रोना ही अच्छा है।
बांके उस खम्बे से लिपटते ही चीख पड़ा –
आ हई ऽऽऽ ये.. ये तो गर्म है। बहुहुहु।
और नहीं तो क्या ठण्डा है। ही ही ही।
पहला फन प्रसन्न हो गया।
अब दूसरे फन को प्रसन्न करने के लिये तुम्हें करनी है दूसरी क्रिया यानी... तुम्हें नाक में नथ डलवानी होगी। ही ही ही।
न... नथ! पर हमारे यहां नथ तो स्त्रियां पहनती हैं। नथ रूपकंवर को पहना दो। बहुहुहु।


नहीं! हम स्त्रियों पर जुल्म होते नहीं देख सकते। नथ लाओ।
पर नथ डालने के लिये तो मेरी नाक भी नहीं छिदी हुई।
तो हम बिना छेदे थोड़े ही डाल देंगे। सूआ लाओ हा ही ही।
स... सूआ?
बांकेलाल! समझा करो हम इनका कहा मानने के लिए विवश हैं। अन्यथा ये पंगा मणि नहीं देंगे।
सूए से बांके की नाक छेद दो बांकेलाल। चीखना मत। ही ही ही।
बहुहु! ये सब उस दुष्टा डायन दुष्टयंती के कारण हो रहा है। एक बार पंगा मणि हाथ आ जाए तो बहुहुहु।
ही ही ही! बांके चीखना नहीं, सूआ घुसेड़ रहा हूं।
आऽऽऽऽऽऽऽ
ही ही ही अबे तू तो ऐसे चीख रहा है। जैसे नाक कट गई हो।


लो बांके। ये मैंने तुम्हारी बिदी हुई नासिका में नथ भी पहना दी। हीहीही।
बहूहूहू! अब धोती और चूड़ियां भी पहना दो। बहूहूहू।
दूसरे फन के प्रसन्न होने के बाद यही तो तीसरी क्रिया है बांकेलाल! ही ही ही।
तुम्हें ये वस्त्र पहन कर नृत्य करके हमारा मनोरंजन करना है। हीहीही।
बांकेलाल! ये वस्त्र पहन लो। ये आखिरी क्रिया है।
मरता क्या न करता। बांकेलाल को नृर्तकी के वस्त्र पहन कर नृत्य करना ही पड़ा -
इन्हीं लोगों नेऽऽऽ इन्हीं लोगों ने ऽऽऽ इन्हीं लोगों ने ले लीना दुपट्टा मेरा ऽऽऽ होजी हो ऽऽ दुपट्टा मेरा ऽऽऽ हीही बहूहूहू। इक दुस्विचारी कहे ऽऽऽ बात ये रोते ऽऽऽ राम तेरी गंगा मैली हो गई... पापियों के पाप धोते-धोते। हीहीही बहूहूहू
वाह, वाह, तीसरा फन भी प्रसन्न हो गया
बांकेलाल! अब मैं तुम्हें अपने फन पर बिठाकर पंगामणि तक पहुंचा दूंगा। तुम पंगामणि ले लेना ही ही ही।
बांकेलाल! हमारे संकट अब बस टलने ही वाले हैं।
इसलिए तो सब चुपचाप सह रहा हूं।


और फिर-
बांकेलाल। अब मैं तुम्हे पंगामणि तक पहुंचा देता हूं। ही ही ही।
आपकी बड़ी कृपा होगी।
जल्दी ही-
बांकेलाल! जल्दी से पंगामणि उठा लो।
आहा! आखिर मिल ही गई पंगामणि।
बांकेलाल! उतरते वक्त पंगा-मणि की रक्षक मधुमक्
तुम्हें डंक मारेगी।
उसका दर्द तो तुम्हें सहना ही पड़ेगा ही ही ही।
आह!
ही ही ही
पर सारे दर्द भूल गए पंगामणि के आगे।
देखो! हमें पंगामणि मिल गई।
बहुत अच्छा! अब हमें यहां से चलना चाहिए।
तुम जहां जाना चाहो ये मणि तुम्हें पहुंचा देगी। बस एक दूसरे का हाथ पकड़कर एक बार 'थूल कबड्डी-कबड्डी' कह दो। ही ही ही।


बांकेलाल व रूपकंवर ने एक दूसरे का हाथ थाम लिया, और तब बांकेलाल ने कहा-
चल कबड्डी! कबड्डी।
इतना कहते ही दोनों वहां से गायब हो गए।...
...जबकि इधर बुरी तरह से व्यग्र थी डायन रानी दुष्टयंती।
हे जबड़ा देव! अभी मेघ छंटे नहीं?
नहीं! अभी तो मूसलाधार वर्षा हो रही है। तुम्हें वर्षा बंद होने तक प्रतीक्षा करनी होगी।
किंतु हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते।
उस स्वर को सुनकर डायन रानी दुष्टयंती चौंक कर खड़ी हुई तो-
राजा विक्रमसिंह! तू यहां कैसे पहुंच गया?
क्योंकि तेरी मृत्यु मेरे हाथों लिखी है दुष्टा!
तूने मेरे प्यारे बांकेलाल को बहुत कष्ट दिये। अब मरने के लिए तैयार हो जा।
तो फिर अब मुझे बुलाना ही पड़ेगा दहाड़ू को!
दहाड़ू!!


दहाड़ का इंतजाम तो मैं किये देता हूं। हीही ही।
आह... गर्रर्रर्र
अब तुममें से कोई भी नहीं बचेगा। मेरे पास छत्तीस दांतों के जबड़े की तिलिस्मी शक्ति है। हीहीही
दुष्टा!
स्वर्णलता दुष्टयंती पर झपट पड़ी-
पहले तो मैं तुझे सबक सिखाऊंगी।
आह!
दुष्टयंती भी क्रोध से फुंफकारती स्वर्णलता पर टूट पड़ी-
मुझसे भूल हो गई जो मैंने स्वामी को नगर से बाहर जाने दिया। सारी मुसीबत इसी कारण शुरू हुई।
मुसीबत की जड़ तो तू ही है।

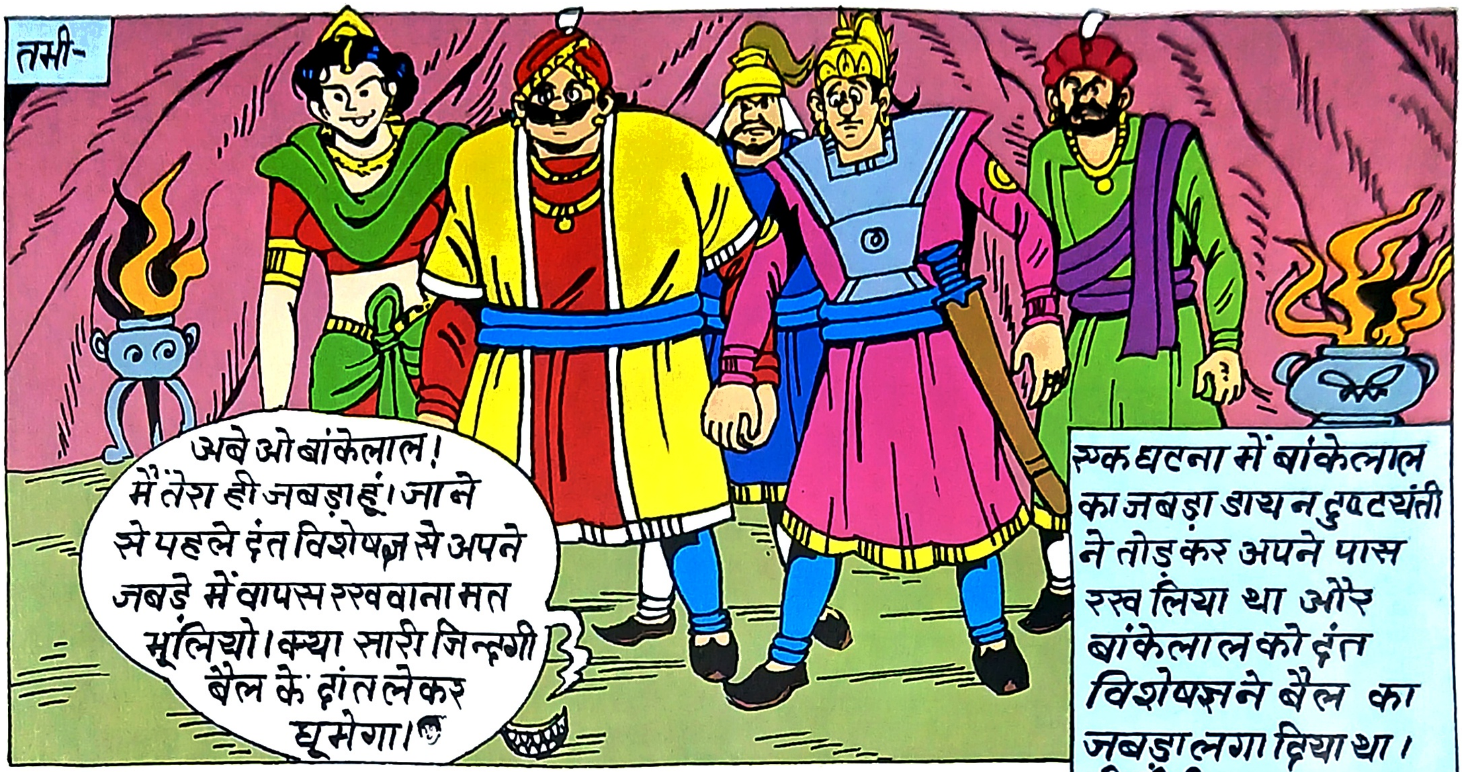

तभी वहां प्रकट हो गए बांकेलाल व रूपकवंर
दुष्टा दुष्टयंती। तेरा अंत अब निकट है।
ये देख पंगा मणि!
प... पंगा मणि ये तुम्हें कहां मिली स्वामी।
इस अवसर का लाभ उठाकर स्वर्णलता ने डायन रानी को फर्श पर पटक मारा -
तेरे पापों का घड़ा भर गया दुष्टा!
धाड़
मैं तो शांति व राजसिंहासन की तलाश में छत्तीसगढ़ आया था। किंतु तूने मेरा जीना दुश्वार कर दिया। अब तो मुझे पत्नी के नाम से भी भय लगने लगा है। बहूहूहू।
ऐ पंगा मणि! जल्दी बता वो परकाया प्रवेश मंत्र ताकि मैं इन दोनों की आत्माएं ठिकाने पर पहुंचा सकूं।
इतना कहते ही बांकेलाल की जुबान स्वयंमेव मंत्र बुदबुदा उठी।
मछली तेरे पानी में चील उड़े वायु में। चीता दौड़े धरती पर।
शोर करे गर्ईईई चिड़िया करे चिर्ईईई मेंढक करे टर्ईईई।
नहीं! ऐसा मत करें स्वामी। आह! मंत्र पढ़ना बंद करो। बहूहूहू।


दूसरे ही क्षण दोनों आत्माएं अपने-अपने असली शरीर में प्रवेश कर गईं -
नहीं!
आह! मेरी आत्मा मेरे शरीर में लौट आई।


तभी डायन दुष्टयंती का शरीर जलने लगा -
अब मैं जीवित नहीं बचूंगी क्योंकि मानवों पर तीन बरस तक शासन करने का मेरा अभियान सफल नहीं हो सका। अगर ये सफल हो जाता तो मैं अमर हो जाती।


दुष्टयंती के जलकर राख होते ही बांकेलाल के हाथ से पंगामणि भी गायब हो गई तब–
मेरे बांकेलाल! अब मैं तुझे कहीं नहीं जाने दूंगा। दे पुच्ची।
महाराज रुक और। वाह! आज तो पुच्ची बहुत अच्छी लग रही है। ही ही ही।
किंतु महाराज! अब बांकेलाल जी मेरे स्वामी भी हैं। अब जहां मैं रहूंगी वहीं मेरे स्वामी भी रहेंगे। मुझे इनकी सेवा करने का सौभाग्य तो अभी तक मिला ही नहीं। छत्तीसगढ़ को मेरी जरूरत न होती तो मैं आपके साथ ही चलती।
मेरी आपसे विनती है स्वामी कि आप मेरे साथ छतीसगढ़ में ही सम्मानपूर्वक रहें। अब आपको चरणासन्न से कोई नीचे नहीं उतारेगा।
नहीं!
किंतु पुत्री रूपकंवर!
चरणासन्न रानी के चरणों के पास रखा आसन जो बांकेलाल के लिये बनवाया गया था।


हमारे यहां घरजमाई का रिवाज है।
किंतु बांकेलाल से चूंकि तुम्हारा विवाह हो चुका है, इसलिए मैं उसे जबरन साथ नहीं ले जा सकता। ये अब बांकेलाल की इच्छा पर निर्भर है कि वो यहां रहता है या विशालगढ़ में। क्यों बांकेलाल?
महाराज! मैं रहूंगा तो विशालगढ़ में। लेकिन जब तक मेरी पत्नी जीवित है छतीसगढ़ भी समय-समय पर आता-जाता रहूंगा। क्या करूं। अब पति धर्म भी तो निभाना पड़ेगा।
बेटा बांके! एक बार घर जमाई बन कर देख लिया। तेरे लिये तो विशालगढ़ ही स्वर्ग है।
मुझे इसमें भी कोई एतराज नहीं स्वामी!
किंतु जब भी मेरी याद आए और छत्तीसगढ़ आना हो तो सूचना पहले ही भिजवा देना, ताकि मैं महल के दासदासियों को छुट्टी दे दूंगी। ही ही ही। अच्छा स्वामी। अब मैं आप सबको विशालगढ़ भिजवाने का इंतजाम करवाती हूं। ही ही ही।
मुझे तुम्हारी याद कभी-कभी ही आयेगी। हह हह।


तभी-
अबे ओ बांकेलाल! मैं तेरा ही जबड़ा हूं। जाने से पहले दंत विशेषज्ञ से अपने जबड़े में वापस रखवाना मत भूलियो। क्या सारी जिन्दगी बैल के दांत लेकर घूमेगा।
एक घटना में बांकेलाल का जबड़ा डायन दुष्टयंती ने तोड़ कर अपने पास रख लिया था और बांकेलाल को दंत विशेषज्ञ ने बैल का जबड़ा लगा दिया था। ही ही ही।


और इस प्रकार रानी रूपकंवर ने उन्हें वहां से विदा किया-
बाप रे! अब बना मैं असली छत्रपति बांकेलाल क्योंकि आजादी से बड़ा कोई छत्र नहीं होता सिर पर। ही ही ही। जान बची और लाखों पाए। लौट के बुद्धू घर को जाए। ही ही ही
विदा स्वामी!

समाप्त

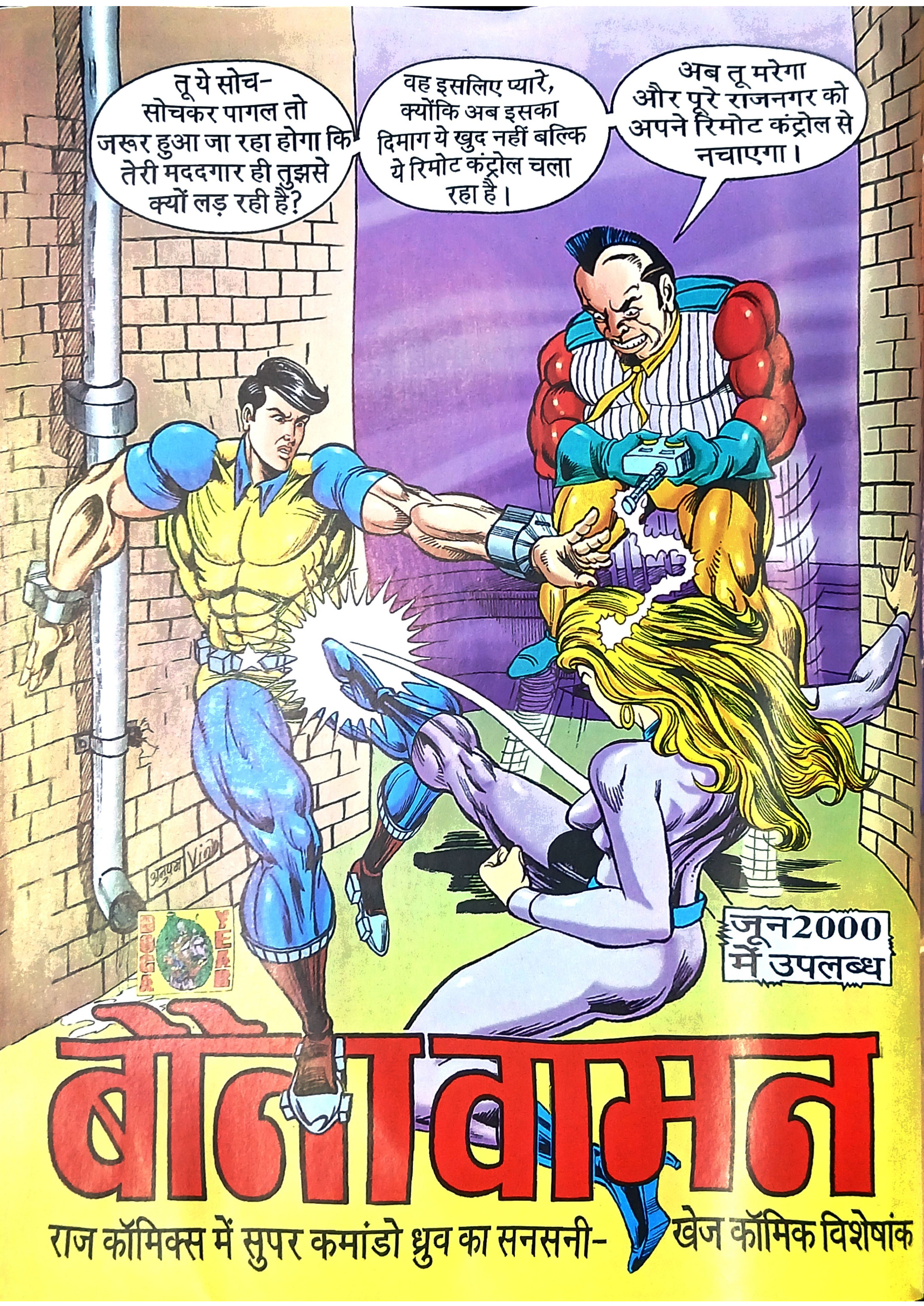
GREEN PAGE-131

प्रिय पाठक मित्रो, नमस्कार!

चरणदास बांकेलाल से आप मिले। जी हां, बेचारा राजा बनने चला बांकेलाल अपनी पत्नी के चरणों का दास बन कर रह गया। बेचारे गरीब का विक्रमसिंह से ज्यादा तो रानी रूपकंवर ने खून चूस लिया। और जब वह आजाद होने के लिए भागा तो उसे फिर रानी रूपकंवर यानी डायन रानी ने पकड़ लिया। फिर छत्रपति बनने निकला चोटीलाल और तब जाकर बेचारे को डायन रानी से मुक्ति मिली। अब वह फिर पहुंच गया है अपने मोटू, मनहूस, मुच्छड़, बदबूदार पुच्ची वाले राजा विक्रमसिंह के पास और ली है राहत की सांस। अब तो बांके यहीं रहेगा और करेगा विक्रम की नाक में दम। आशा है हमारे सभी पाठकों को **छत्रपति बांकेलाल** बेहद पसंद आया होगा। कृपया अपने सुझाव हमें अवश्य लिख कर भेजें।

अब बांकेलाल का आगामी विशेषांक है **चमत्कारी जड़ें**। जिसमें बांकेलाल जंगल में वृक्ष देवता से पांच बार में पांच चमत्कारी जड़ें लेकर आता है और इन जड़ों के जरिए एक बार फिर विक्रमसिंह को मारकर राज सिंहासन हड़प करने की साजिशें रचता है। हर जड़ की अपनी एक विशेषता है जो कि महल के प्रांगण में बो दिए जाने के पश्चात गुल खिलाती है। और जब भी बांकेलाल कोई जड़ बोता है तो ऐसे-ऐसे गुल खिलते हैं कि बस पूछो नहीं। बेचारे की बोई हुई चमत्कारी जड़ों ने राजा विक्रमसिंह को कई बार मौत के मुंह में पहुंचा दिया, लेकिन चमत्कारी जड़ें अंत में उसका उद्देश्य पूरा कर पाईं या नहीं, यह तो आपको **चमत्कारी जड़ें** पढ़ने के बाद ही पता चलेगा। तो प्यारे पाठको, जून माह में आप पढ़ पाएंगे बांकेलाल का हास्य विशेषांक **चमत्कारी जड़ें**। तब तक के लिए विदा।

पत्र व्यवहार इस पते पर करें :-**ग्रीन पेज-131, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84.**


तू ये सोच-सोचकर पागल तो जरूर हुआ जा रहा होगा कि तेरी मददगार ही तुझसे क्यों लड़ रही है?
वह इसलिए प्यारे, क्योंकि अब इसका दिमाग ये खुद नहीं बल्कि ये रिमोट कंट्रोल चला रहा है।
अब तू मरेगा और पूरे राजनगर को अपने रिमोट कंट्रोल से नचाएगा।
जून 2000 में उपलब्ध
बौना वामन
राज कॉमिक्स में सुपर कमांडो ध्रुव का सनसनी-खेज कॉमिक विशेषांक

RAJ COMICS राज कॉमिक्स BY MANOJ GUPTA

बांकेलाल

हास्य सम्राट बांकेलाल!
उसका डेढ़ पसली बदन, सिर पर लगा बोदी वाला एंटीना, और सामने के निकले दो दांत ही उसके षड्यंत्रकारी दिमाग में चल रही खुराफातों को उजागर कर देते हैं।
सदियों से ही उसका बस एक ही सपना है, किसी तरह विशालगढ़ के महाराज विक्रम सिंह को रास्ते से हटाकर खुद राजा बनना। मगर, एक श्राप के कारण, वो जिसका भी बुरा करने निकलता है, उसका भला ही हो जाता है। नित नई योजना बनाता बांकेलाल न चाह कर भी हर मुश्किल हल करके बन जाता है सबका प्यारा बांकेलाल।



प्रिय दोस्तों,
1986 में राज कॉमिक्स की स्थापना के बाद से आज तक आप सभी का जो अटूट प्रेम मिला, साथ मिला, उसके लिए हम हृदय से आपके सदा आभारी हैं।
आपका,
मनोज गुप्ता



COMICS
ISBN 978-93-324-0834-0
9 789332 408340
SPCL-0194
₹200.00
www.rajcomics.net